किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

भोपाल इज्तेमा

29 दिसम्बर सन 1959

जमातों मे जाने वालों को हिदायात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मेरे अज़ीज़ो ! दुनियॉ मे आज दो किस्म की मेहनतों का रिवाज हैं, 1 मुल्क की मेहनत 2 माल की मेहनत और इसी के लिये दिन मे भी मेहनतें हो रही हैं और रात मे भी अब इन मेहनतो के साथ अगर एक तीसरी मेहनत नही की जायेगी तो ये मेहनतें अपने साथ तबाही और बर्बादी लेकर आयेगीं।

वो तीसरी मेहनत क्या है ? वो तीसरी मेहनत अम्बिया अलै0 वाली मेहनत है

अम्बिया अलै0 वाली मेहनत क्या है ?

अम्बिया अलै0 ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत करते थे, मुल्क व माल पर मेहनत करने वालों के अगर यकीन की दुरूस्तगी के साथ अमल दुरूस्त होगें कि ये रहम करने वाले, हमदर्दी करने वाले, माफ करने वाले होगें तो यही मुल्क व माल की मेहनत उन्हे उरूज तक पहुॅचायेगी और अगर यकीन की दुरूस्तगी के साथ अमल दुरूस्त ना करेगें तो ये मुल्क व माल की मेहनत उन्हे तबाह और बर्बाद कर देगी।

अब ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत का रिवाज कैसे पड़ जाये ?

ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत का रिवाज उस वक्त तक नही पड़ सकता जब तक एख्लाक के, मुहब्बत के, मुरव्वत के अमलों की फिजा तीसरी मेहनत करने वाले पैदा ना कर दे, जब इन अमलों की फिजा बनेगी तो मुल्क व माल की मेहनतें करने वालों की गर्दनें इनके सामने झुक जायेगीं, तब उन्हे अपनी मुफलिसी का एहसास होगा।

ईमान और आमाल की दुरूस्तगी, मेहनत कब बनेगी ? ये सिर्फ जुबान के कहने से मेहनत नही बनेगी बल्कि मेहनत तब बनेगी जब इस मेहनत के करने वालों के दिलों मे ना मुल्क की चाहत हो ना माल की चाहत हो, उनके दिलों से ये बात निकल जाये कि मैं मालदार हो जाऊ, जमीनों का मालिक बन जाऊॅ, और मुल्क हमारे ताबे हो जाये अगर ये भी ईमान की मेहनत से मुल्क व माल और चीजें चाहेगें तो ये ईमान और आमाल की मेहनत एक रस्म बनकर रह जायेगी, मेहनत ना बनेगी। फिर ये तो वही बात होगी कि वो माल की मेहनत करके माल चाहें और हम ईमान की मेहनत करके माल चाहें, इसलिये ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत करने वाले ना मुल्क व माल के तालिब हों और ना चीजों के तालिब हों, इनका ख्याल हमारे अन्दर आना खत्म हो कि ये ओहदे हमारे हों, ये मुल्क हमारा हो बल्कि सारे नबियों ने यही कहा,

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ

सूरह शूरा 109

हम तुमसे अपनी मेहनत का बदला नही चाहते, हम तो अल्लाह से इसका बदला चाहते हैं।

ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत के मुक्तदा सहाबा थे और सहाबा के मुक्तदा हुजूर सल्ल0 थे, हम मुक्तदी तो तब बनेगें जब हमारी नियत और रूख वही हो जो इमाम का हो और जो इमाम कर हो वही मुक्तदी भी कर रहा हो, ये नही कि इमाम की नियत कुछ और पर मुक्तदी की नियत कुछ और, इमाम का रूख कुछ और पर मुक्तदी का रूख कुछ और, वो सज्दे मे जा रहा हो और ये रूकूउ मे, तो ये इक्तेदा कहॉ होगी ? इक्तेदा के लिये तीन बातें जरूरी हैं,

1 नियत एक हो,

2 रूख एक हो,

3 अमल की तर्बीयत एक हो,

अगर ये तीनों बातें नही हैं तो मुक्तदी होने का दावा ही झूठा है, अगर मुक्तदा की नियत खुदा को रजा हो और मुक्तदी की नियत रोटी की हो तो नियत के फर्क की वजह से इक्तेदा टूट गयी। इसी तरह मुक्तदा अगर अमल की तर्बीयत मे ईमान और

आमाल ए सालिहा की मेहनत मे ज्यादा वक्त लगाये और मुल्क व माल की मेहनत पर हस्बे गुजारा और मुक्तदी का अमल मुल्क व माल हो तो इक्तेदा कहॉं रह गयी।

क्या वजह है कि आज देखने वालों को हुजूर सल्ल0 वाली लाईन समझ मे नही आ रही है ?

इसकी वजह ये है कि उनकी मेहनत और थी पर अपने को उनका मुक्तदी कहने वालों की मेहनत और है, जब तक दिल की नियत, जाहिर की निगाह, मन का बोल और हाथ पैरों का अमल, इसे मेहनत पर ना डालेगा इसके मुक्तदी होने का दावा ही गलत है। इस मेहनत से लोगों के दिल खिचेगें कि हुक्काम के, सरमायेदारों के, अक्सरियत के दिल खिचेगें मगर शर्त ये है कि इस मेहनत को करने वालों के अन्दर से मुल्क व माल का ख्याल खत्म हो जाये, अब इस ऐतबार से हम खुद मोहताज बन गये। आज हमारा रूख अम्बिया किराम और हुजूर सल्ल0 वाले अन्वार के समन्दर मे गोते लगाने वाली मेहनत से हटकर माल व दौलत पर मेहनत करने वालों की तरफ हो गया है, ये ना कहो कि सारी दुनियॉं कुसूरवार है, ये कहो कि सबसे ज्यादा मै कुसूरवार हूँ, हुजूर सल्ल0 ने खून बहा कर, पत्थर खाकर और गालियॉं सुनकर सहाबा को जिस रूख पर डाला था हम इससे फिरे हुए हैं ये हमारा कुसूर है। खुदा अपने रहम व करम से माफ कर दे, ये चोरियॉं और डाके, जिना और कत्ल इसलिये हो रहे हैं कि ये मेहनत हममे ना रही। जिना से, चोरी से, कत्ल से और डाके इन सबसे बड़ा हमारा ये कुसूर है,

हुजूर सल्ल0 ने ये मेहनत किस लिये की ?

क्या माल व दौलत के लिये की या अपनी बड़ाई और रूत्बे के लिये की ?

औरतों के लिये की या सरदारी पाने के लिये की ?

आपसे तो शुरू मे ही ये पेशकश की गयी थी कि आप لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ की मेहनत ना कीजिये इसके बदले मे आप हमे साफ साफ बतायें कि इस मेहनत से आप क्या चाहते हैं ?

अगर आप इस मेहनत से सरदारी या हुकूमत चाहते हैं तो आप ये मेहनत छोड़ दीजिये हम आपको हुकूमत देने को तैयार हैं। अगर आप इस मेहनत से माल या दौलत चाहते हैं तो आप ये मेहनत छोड़ दीजिये हम आपको अपनी सारी दौलत लाकर दे देते है कि आप अरब के सबसे बड़े मालदार बन जायें।

अगर आप ये चाहते हैं कि आपका रूत्बा बुलन्द हो जाये और आपकी बुजुर्गी बढ़ जाये तो हम आपके सामने घुटने टेकने और आपके हाथ चूमने के लिये तैयार हैं।

अगर आप इस मेहनत से ये चाहते हैं कि आपको खूबसूरत औरतें मिल जायें तो हम अपनी बीबियॉं और बांदियॉं सबके सब आपको पेश करते हैं बस आप ये मेहनत छोड़ दीजिये।

ये सुनकर हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! मैं ये मेहनत इसलिये नही कर रहा हूँ कि मैं तुम्हारा बादशाह बन जाऊँ, बुजुर्ग या सरदार बन जाऊँ और मालवाला या खूबसूरत औरतों वाला बन जाऊँ, मै तो لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ की मेहनत इसलिये कर रहा हूँ ताकि मेरा खुदा मुझसे खुश हो जाये। खुदा माल व दौलत और हुस्न व शौकत से खुश नही होते बल्कि ईमान और आमाल ए सालिहा की मेहनत से खुश होते हैं

आज ईमान और आमाल की दुरूस्तगी की मेहनत करने के लिये कौन लोग आ रहे है ?

इसमे दो किस्म के लोग आ रहे है, एक माल वाले आ रहे है और एक मुल्क वाले, ये लोग जिन किस्मों से आ रहे है उसी के लिये लगे है, ये लोग तीसरी किस्म वाले नही बनेगें, तीसरी किस्म वाले तब बनोगे जब तीसरी किस्म के बनने की नियत करके आओगें।

इसलिये सबसे पहला मसअला क्या है ?

सबसे पहला मसअला दिल का है कि खुदा दिल की कैफियत देखते हैं लिहाजा दिल के अन्दर से ये बात निकाल दो कि खुदा के मासिवा से तुम्हे कोई नफा पहुँचेगा, मुल्क व माल चाहे जितना हो इनसे तुम्हे कोई नफा नही पहुँचेगा अगर तुम्हारे अन्दर से ये बात निकल गयी तो फिर मुल्क व माल वालों के लिये तुम्हारा वजूद रहमत बन जायेगा, तुम अपने लिये भी और दूसरों के लिये भी रहमत बन जाओगे। आज तुम तब्लीग मे जा रहे हो इस निकलने मे जो फायदे तुम्हे नजर आयेगें तुम उन्ही की नियत करोगे तब खुदा की रजा का ख्याल भी ना आयेगा, खुदा की रजा का ख्याल बड़ी मेहनत के बाद दिल मे आयेगा कि ये सारी मेहनत मै खुदा की रजा के लिये कर रहा हूँ, अभी तो हम दो किस्मों मे पड़े हुए इन्सान है। इसलिये जब तुम तालीम की मज्लिस मे बैठो, गश्तों मे जाओ, एक गॉव से दूसरे गॉव मे जाओ तो सिर्फ यही बात दिल मे रखो कि मै खुदा की रजा

के लिये कर रहा हूँ, दिल कहेगा शहर देख लूँ, बागात देख लूँ, बाजार देख लूँ थोड़ा दिल बहल जायेगा मगर इस ख्याल को तुम अपने दिल से निकालो और ये बात दिल मे डालो कि खुदा की रजा के अलावा हमारे निकलने का और कोई मकसद नही। इसलिये हर काम करने से पहले अपनी नियत को सही करते रहना, तुम अपने को नियत का बीमार समझ लो और बार बार तस्दीक करो कि तीसरी किस्म वाले तब ही बनोगे जब तुम्हारा हर काम खुदा की रजा के ख्याल पर आ जाये। आजकल मुल्क व माल पर मेहनत करने वाले इतने हैं जितने दुनियॉ भर मे कुत्ते है लेकिन कमी है तो इस किस्म के लोगों की, ये तो नियत हुई अब दूसरी बात है यकीन की।

यकीन एक चीज है जो दिल मे पैदा होता है, तब्लीग मे इसी लिये निकाला जाता है कि हम इस राह मे निकल कर अपने दिल मे لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ को बोल बोलकर जो बोला है उसका यकीन पैदा करे कि खुदा खजानों वाले हैं, तकलीफों और परेशानियों को दूर करने वाले हैं अगर हमने उनको राजी कर लिया तो ये तकलीफें, परेशानियॉ और मुसीबतें सब खत्म हो जायेगीं। इसका यकीन पैदा करो कि खुदा थोड़ी चीज को बढ़ाकर दिखायेगें, खुदा बगैर दवा के बीमारियों को महज अपनी कुदरत से अच्छा करके दिखायेगें वरना जो यकीन आज मुश्रिकीन, यहूद और नसारा का है वही यकीन हमारा है कि खेती से काम चलेगा और दुकान से काम चलेगा, फर्क सिर्फ इतना है उन्होने खुदा को न माना हमने खुदा को मान लिया, हमने नमाज पढ़ ली उन्होने नमाज नही पढ़ी, जिंदगी बनने का यकीन सबका वहीं पर है। यह यकीन नही कि अल्लाह की बड़ाई को बोलो अल्लाह पालेगें, ईमान व अमल की मेहनत करो अल्लाह पालेगें, जिस अक्ल से वह बोले उसी अक्ल से हम बोले, जिस यकीन स वह बोले उसी यकीन से हम बोले, दोनों मे कोई फर्क नही। आज तुम अल्लाह के रास्ते मे यकीन बदलने जा रहे हो, यह यकीन के मुड़ने की आखिरी जगह है। खेती से, दुकान से, मुलाजमत से पैसे मिल गये, पैसों से चीजें मिल गयी, यह यकीन निकालना है। हम ईमान और अमल को दुरूस्त करने के लिये फिरेगें अल्लाह पालेगें, तालीम करेगें अल्लाह पालेगें, अल्लाह का जिक्र करेगें अल्लाह पालेंगें, अल्लाह से होना बोलेंगें अल्लाह पालेंगें, गश्त करेंगें अल्लाह पालेगें, दूसरों की खिदमत करेंगें अल्लाह पालेगें। ये यकीन पैदा करो कि खुदा हमारी हर जरूरत को पूरा करेगें और नियत मे लाओ कि हम ये काम खुदा से अपनी जरूरतों को पूरा कराने के लिये नही कर रहे है बल्कि खुदा को राजी करने के लिये कर रहे हैं।

अब आप तब्लीग मे निकल कर आये हो तो सबसे पहले मेहनत की जाहिरी शक्ल को ठीक करना पड़ेगा, हुजूर सल्ल0 आर सहाबा किराम ने मेहनत की जो जाहिरी शक्ल कायम की थी वही सही शक्ल है और उसी शक्ल पर अपने आपको लाना है। जिस तरह जब नमाज की नियत बांधी तो चार चीजों के अलावा सब कुछ छोड़ना पड़ता है इसी तरह ये समझ लो कि जब तब्लीग की नियत कर ली तो इसमे चार चीजों के अलावा सब कुछ छोड़ना आ जाये।

नमाज मे क्या ?

नमाज मे कयाम, रूकुऊ, सज्दा और कायदा कि हर नमाज मे ये चार चीजें आयेगीं,

दूसरी शर्त ये है कि ये चारों चीजें तर्तीब से आयेगीं,

तीसरा ये कि जिस अरकान को जिस हालत मे करने के लिये बतलाया है उसी हालत मे करना पड़ेगा और

चौथी चीज नियत।

इसी तरह तब्लीग मे समझ लो कि चार चीजें खुदा की राह मे निकल कर करनी है,

1 दावत

2 तालीम

3 खुदा का जिक्र और

4 नमाज, ये चार काम है जिन पर हमे अपने आपको डालना है। तब्लीग में निकाल कर अपनी आंखों पर बहुत काबू रखो क्यों कि नजर आने वाली चीज का जो यकीन बनता है वही शिर्क है और हम तब्लीग में उस यकीन को अपने दिल के अन्दर से निकालने निकले हैं अब अगर आंखों से गलती हो गयी तो जुबान को नजर आने वाली चीज का तज्किरा करने से रोको, कानों को उनका तज्किरा सुनने रोको। अगर कोई भाई बुरा भला कह दे तो तुम सुन लो जवाब मत दो बल्कि कहो भाई हम तो कलिमा सीखने आये हैं हम लड़ना सीखने नही आये है। इसमे बहुत एहतियात करनी चाहिए और जब उनके नक्शों पर नजर पड़ जाये तो ख्याल करे कि न मालूम कैसे-कैसे जुल्म के बाद और यतीमों और बेवाओं के हुकूक पर हाथ डाल कर ये नक्शे कायम हुए होगें। तुम्हारा यकीन उस वक्त बनेगा जब दूसरों से बात करो तो अपना यकीन बनाने की नियत से करो

अगर यकीन सिर्फ जुबान पर होगा तो चन्द झटकों में खत्म हो जायेगा और अगर यकीन कल्ब में रासिख हो गया तो फिर जहां भी घूमोगे तुम्हारे यकीन में कुछ फर्क न पड़ेगा अगर सही मायने में एक कलिमे वाला आदमी पेदा हो जावे तो उससे हजारो ओर लाखो का यकीन बनेगा अगर दूसरों के पास मादियात हैं तो हमारे पास अम्बिया वाली आवाज है जिसके सामने खुदा ने तमाम आवाज को पस्त कर दिया लेकिन ये आवाज एख्लास के साथ खुदा को राजी करने के लिए और उसके ध्यान के साथ हो।

दावत के बाद हमारा वक्त तालीम में लगेगा, सुबह में भी तालीम हो और शाम को भी तालीम हो, जब खूब फजायले सुने जायेग तो उससे इल्म आयेगा। अब ये इल्म या तो नूर के साथ आयेगा या बिला नूर आयेगा और नूर वाला इल्म उस वक्त मिलेगा जबकि हम ये इल्म इस तरह लें जैसे हुजूर सल्ल0 ने जिब्रील अलै0 से लिया और सहाबा किराम रजि0 ने आप सल्ल0 से लिया यानी पूरे अदब के साथ सुने, वुजु करके सुने, गरदन झुका कर अजमत के साथ सुने, वर्ना भाई बगैर नूर के इल्म हासिल करने से खुद झकोगे और दूसरों को भी झकाओगे जैसे यहूद व नसारा भी उस इल्म को हासिल करते हैं मगर वह दूसरों को गुमराह करते हैं। एक मोहदिदस हदीस बयान कर रहे थे दो आदमी किसी बात पर हंस पड़े तो उन्होने उसी वक्त हदीस पढ़ना बन्द कर दिया और कहा उससे बेहतर ये है कि मैं जिहाद में चला जाऊं, लोगों ने कहा इस उमर में क्या करेगें ? कहा ! अगर कुछ न होगा तो मर तो जाऊंगा। भाई ! जिस तरीके से अपने महबूब का खत आता है और उसको शौक के साथ सुनते है, इसी तरह शौक के साथ तालीम सुने और पूरी अजमत के साथ सुने जैसे हुजूर सल्ल0 खुद तशरीफ फरमा हों, अल्लाह की बात करते हुए किसी का तास्सुर दिल में न हो वर्ना फिर एक बदमाश और फासिक की बात तुम्हारे दिल में उतर जायेगी।

फिर पूरे ध्यान के साथ जिक्र करें, ये नही कि सिर्फ जिक्र के अल्फाज जुबान पर हों और ध्यान चीजों में हो। इसकी मश्क यहीं से करें और अगर उसकी मश्क करोगे तो यहां भी तुम्हारी बात का असर होगा और कुफफार भी उससे मुतास्सिर होंगे, ये तमाम तो जिक्र की सूरते हैं वर्ना असली चीज तो खुदा का ध्यान है, बकिया वक्त नमाज में लगे इस यकीन के साथ कि खुदा से होता है, कामयाबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल से होती है और उन आमाल में से नमाज है और नमाज के तमाम फजायल का इस्तहजार करो अब नमाज पढ़ कर दुआ करो कि खुदा हमारे अन्दर की आंख खोल दे, अल्लाह की राह में फिरने वालों में आपस में जोड़ हो अगर जोड़ न होगा तो शख्सी फवाइद तो मिल जायेगें मगर इज्तिमाई फवाइद नही मिलेगें।

हजरत उस्मान रजि0 के जमाने मे हजरत उस्मान रजि0 नही बदले मगर अवाम बदली कि अमीर पर और बड़ो पर एतराज करना शुरू कर दिया। हजरत उमर रजि0 के जमाने में ये बात न थी, हजरत उमर रजि0 के जमाने में हजरत खालिद रजि0 बरतरफ हो गये, रात की तारीकी में हजरत उमर रजि0 जा रहे थे हजरत अल्कमा रजि0 ये समझे कि खालिद जा रहे तो अल्कमा रजि0 ने कहा कि खालिद ! हजरत उमर ने भी आवाज बदल कर खालिद की तरह आवाज निकाली। इन्होने कहा देखो उमर रजि0 ने तुम को माजूल कर दिया तो हजरत उमर रजि0 ने खालिद की आवाज में कहा कि हां भाई मुझे माजूल कर दिया मगर अब क्या करें ? तो अल्कमा रजि0 ने कहा भाई ! जब हमने खलीफा मान लिया तो अब उनकी इताअत ही करनी चाहिए। इसी वजह से खुदा की नुसरतें हजरत उमर रजि0 के साथ थी, इसलिए निकलने के जमाने में बाहम मश्विरह करके जो तै हो वही करो और एहतिमाम से मश्विरह करना अमीर की जिम्मेदारी होगी और अमीर की इताअत बाकी लोगों की जिम्मेदारी होगी जब तक मासियत का हुक्म न हो।

हजरत खालिद रजि0 के माजूल करने की वजह में एक बात ये भी थी कि हजरत खालिद रजि0 रूकना नही जानते थे और साथियों के आराम वगैरह का ख्याल कम रखते थे बस हर वक्त काम की तरफ पूरी तवज्जो रहती थी जबकि हजरत अबु उबैदह रजि0 माशाअल्लाह साथियों का ख्याल रखते हुए काम का हुक्म दते मगर साथियों की इतनी रियायत भी न हो कि फिर उठने का नाम ही न लें, मै तो ये समझता हूं कि हजरत खालिद रजि0 का जमाना ही दौड़ भाग का जमाना था उस वक्त उसी की जरूरत थी जब हजरत अबुउबैदह रजि0 की जरूरत थी तो खुदा ने उनको काम में लगाने की सूरत पैदा कर दी, कुछ लोग कहते हैं कि अमीर साहब मेरी बात नही मानते, इससे तो ये मालूम हुआ कि आप अमीर को अमीर ही नही मानते। भाई जोहद की बातें ठूंसने से नही आती बल्कि उनकी तरगीब देते रहो जो भी उस पर जितना अमल कर ले गनीमत समझो। भाई ! इसके लिए तो माहौल और दुआ की जरूरत है जब जज्बा और शौक पैदा हो जायेगा, वह खुद उस पर अमल

कर लेगा। तुमने हजरत उमर रजि0 का वाकिया सुना होगा कि एक मर्तबा आपने छुरी मंगवाई और कुर्ता चाकू से कटवाया कि हर तरफ एक जैसा नही ओर फिर उसको सिलवाया भी नही हर तरफ धागे निकले हुए थे कभी सर में और कभी दाढ़ी में धागे अटक रहते थे लोग सिलने के लिए मांगते तो फरमाते कि मैने हुजूर सल्ल0 को एक मर्तबा इसी तरह पहने हुए देखा इसलिए मै भी वैसे ही पहनूंगा।

इस रास्ते मे शैतान से बचने के लिये चार काम बहुत एहतियात के हैं अगर इनमे जरा सा भी चूक हुई तो शैतान को मौका मिल जायेगा। 1 सोते वक्त 2 खाते वक्त 3 पेशाब पाखाने के वक्त 4 आपस की बातचीत के वक्त अगर सोते वक्त तुमने अपने जहन को आजाद छोड़ दिया तो शैतान तुम्हे घर की तरफ ले जायेगा कि नरम नरम बिस्तर की याद आयेगी, बीबी बच्चे याद आयेगें, घर के पचासो काम जो तुम छोड़कर आये थे उनमे तुम्हारे जहन को फसायेगा बस एख्लास तो हो गया खत्म और बेचैनी शुरू हो जायेगी, अब दूसरे दिन, दावत, तालीम, खुदा का जिक्र और नमाज मे तुम्हारा दिल नही लगेगा। जिन कामों के करने के लिये घर छोड़कर आये थे उनसे अब हफते भर मे तुम्हारी तबीयत घबरा जायेगी, शैतान की इन चालों से बचने के लिये तुम अपने ऊपर पहरेदार बिठाओ,

जब अन्धेरे मे लेटो तो कब्र मे लेटने की सोचो और मौत को याद करते हुए सो जाओ।

जब खाने पीने बैठो तो दो पहरेदार बिठाओ एक आगे का कि आज हम जो खा रहे हैं जन्नत मे इससे अच्छा चााने को मिलेगा और एक पहरेदार पीछे बिठाओ कि हुजूर सल्ल0 और सहाबा किराम का खाना कैसा और क्या होता था ?

फिर पेशाब पाखाने के वक्त अपने गन्दा होने के बारे मे सोचो कि मैं कितना गन्दा हूँ ?

ये अच्छे अच्छे और उमदा खाने चन्द घन्टे मेरे गन्दे जिस्म के साथ रहे तो मेरे गन्दे होने की वजह से ये भी गन्दे हो गये और जो पाक पानी हमे पाक करने की सलाहियत रखता था मेरी सोहबत मे कुछ देर रहकर नापाक हो गया।

अगर आपस मे कोई बात करना जरूरी हो तो बस जरूरत भर की बात करो वरना ना बोलो। इक्टठे होकर या अलग अलग चार दुआऐं खूब मॉगो,

1 सारे आलम के मुसलमानो और मुश्रिकों की हिदायत के लिये,

2 ईमान और अमल की मेहनत करने वालों के लिये,

3 खानदान वालों, रिश्तेदारों और साथियों के लिये,

4 अपने और बीबी बच्चों के लिये,

तुम किसी कौम के किसी मुल्क के किसी वतन के किसी बिरादरी के बनकर जिंदगी मत गुजारों, तुम सारी दुनिया वालों के लिये अल्लाह के बनकर जिंदगी गुजारों। तुम न बाप के हो, न मां के, तुम न भाई के हो न बहन के, बस अल्लाह जिसका पैर पकड़ने को कहे उनके पैर पकड़ कर दिखाओ।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0
हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0
बाद नमाज मग्रिब भोपाल इज्तेमा
27 दिसम्बर सन 1959
मेहनत का सही रूख

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो ! आदम अलै0 से लेकर आज तक जितने भी इन्सान इस दुनियॉ मे आये हैं सबने दुनियॉ मे मेहनत की है और ये भी तयशुदा बात है कि कोई इन्सान नाकाम होने के लिये मेहनत नही करता है, इन्सानियत के हर तब्के के लोग चाहे अमीर हो या गरीब, आलिम हो या जाहिल, ताजिर हो या किसान, ये सब कामयाब होने के लिये मेहनत करते हैं। इन्सानों की मेहनत का मकसद क्या है ?

इन्सान की मेहनत का मकसद इनकी जरूरतों का पूरा होना है।

कामयाबी और नाकामी क्या है ?

इन्सानों की जरूरतों का पूरा होना कामयाबी है और जरूरतों का पूरा ना होना नाकामी है मगर कामयाबी की चोटी पर वही पहुॅचेगा जिसकी मेहनत अपनी मर्जी पर ना होकर हकीकत के मुताबिक हो। इसलिये मेहनत करने से पहले जरूरी है कि इन्सान ये मालूम करे मेहनत क्या करनी है फिर ये कि सही मेहनत क्या है और गलत मेहनत क्या है ?

जो इन्सान इस बात को ना मालूम करे तो उसे नाकामियों का सामना करना पड़ेगा, वो हुकूमत हो या महकूम, अमीर हो या फकीर, मेहनत का तरीका सबके लिये एक है इसलिये इसको मालूम करके अपने आपको सही मेहनत पर डालो।

अब पहली बात ये है कि मेहनत किसको कहते हैं ?

मेहनत कहते हैं खर्च ए इन्सानी को।

क्या मतलब है खर्च ए इन्सानी का ?

खर्च ए इन्सानी का मतलब इन्सान के जिस्म के आजा का इस्तेमाल होना कि ऑखों का इस्तेमाल, कानों का इस्तेमाल, जुबान का इस्तेमाल, हाथों व पैरों का इस्तेमाल और अक्ल का इस्तेमाल कि चौबीस घंटे इन्सान इनका इस्तेमाल कर रहा है यानी इन्सान इन्हे खर्च कर रहा है अगर इसने इसे सही खर्च किया है तो कामयाब हो जायेगा और अगर गलत खर्च किया है तो नाकाम हो जायेगा। अल्लाह तआला ने इन्सानों की कामयाबी और नाकामी को उसके आजा के इस्तेमाल से जोड़ा है अगर किसी के पास माल और चीजें ना हों तब पर भी उसका इस्तेमाल रंग लायेगा और वो सब कुछ पा लेगा और अगर कोई चॉद या सूरज पर रहने लगे पर उसके आजा का इस्तेमाल गलत हो तो सब कुछ खोकर महरूमी का शिकार होगा। ये मेहनत कोई मेहनत नही कि हम चीजों को इकटठा करे, हम हाकिम बनकर रहे या महकूम, मालदार बनकर रहे या गरीब रहें इससे कोई फर्क नही पड़ता। चीजों की वजह से इन्सानियत के जाब्ते नही बदलते कि फकीर मालदार बन जाये या मालदार फकीर, हाकिम महकूम बन जाये या महकूम हाकिम, इससे इन्सानी जाब्ते खत्म नही होते। इन्सान जहॉ हो और जिस हाल मे भी हो इन्सानो जाब्ते उस पर वहीं लागू होगें अगर मालदार का मेदा खराब है तो खाना हजम नही करेगा इसी तरह अगर फकीर का हाजमा खराब होगा वो भी हजम नही कर सकेगा तो जिस तरह जिस्मानी जाब्ते सबके के लिये एक हैं उसी तरह इन्सानी जाब्ते भी सबके के लिये एक हैं।

पैगम्बर हो या आम इन्सान,
आलिम हो या जाहिल,
अमीर हो या फकीर,

मेहनत के जाब्ते सबके लिये एक हैं और जाब्ता ये है कि जिसका अमल खुदा को खुश करेगा वो दुनियॉ मे भी आराम पायेगा और जिसका अमल खुदा को नाराज करेगा उसे दोनो जगह महरूमी होगी, ये है वो जाब्ता ए अमल जो सबके लिये एक है, आलिम के लिये भी जाहिल के लिये भी,

कौमो के लिये भी हुकूमतों के लिये भी,
अमीरों के लिये भी गराबों के लिये भी,
तारीख उठाकर देख लो हुकूमतें क्यों मिट गयी ? तो पता ये चलेगा कि अपने आमाल की गलती से और हुकूमतें क्यों कायम हो गयी ? अपने आमाल की दुरूस्तगी पर।
अमल ठीक कब होता है और अमल खराब कैसे होता है ?
दो चीजें ऐसी हैं अगर वो ठीक हो जायें तो इन्सान आर उसके अमल ठीक हो जाये अगर ये कमजोर होगी तो इन्सान और उसके अमल कमजोर हो जायेगें। मकसद की बुलन्दी पर इन्सान बुलन्द होता है और मकसद की कमजोरी पर कमजोर होता है।
मकसद कब कमजोर होता है ?
जब लोग अपने नफस की ख्वाहिशों को अपना मकसद बनाते हैं, इन्सान का तजुर्बा कर लीजिये जैसी उसकी हैसियत होगी वैसी ही उसके मकसद की हैसियत होगी। इन्सान का ये जिस्म मनी के नापाक कतरे से बना है, ये आज भी वही नापाक कतरा है जो उम्र के लिहाज से बड़ा होता रहता है। जो दस साल का है वो इस कतरे से दस साल बड़ा है और जो पचास साल का है वो इस नापाक कतरे से पचास साल बड़ा है लिहाजा जो इन्सान ख्वाहिश को मकसद बनाये वो चाहे कितना ही बढ़ जाये उसका ये बढ़ना मनी के नापाक कतरे के लिहाज से बड़ा होना है। इन्सान को बुलन्दी अपने बनाने वाले को बड़ा तस्लीम करने मे है कि

اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाह बहुत बड़े, इतने बड़े हैं कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ताकत मे वो बड़े हैं, कूवत मे वो बड़े हैं, इल्म मे वो बड़े हैं, हिकमत मे वो बड़े हैं गरज इतने बड़े हैं कि किसी का वजूद नही वजूद सिर्फ उन्ही का है। इसलिये अल्लाह को अपना मकसद बनाओ तो इस मकसद की बुलन्दी इन्सान को एक बड़ी बुलन्दी पर ले जायेगी, जिसने ला महदूद ताकतों वाले खुदा को, उसकी चाहत को और उसकी मुहब्बत को अपने साथ लेने को अपना मकसद बनाया तो वो अब ला महदूद देखने वाला, ला महदूद सुनने वाला और ला महदूद सोच रखने ने वाला इन्सान है।
इस मकसद तक पहुँचने के लिये हमे क्या करना पडेगा ?
इसके लिये हमे दो काम करने पडेगें पहला काम अपने अन्दर से खराबी निकालने की मेहनत और दूसरा काम खूबियों को पैदा करना अगर ऐसा करोगे तो खुदा को पा जाओगें, ख्यालात की पाकी और आमाल की दुरूस्तगी के रास्ते से बन्दा खुदा तक पहुँचता है। जब तुम किब्र से शहवत से पाक हो जाओगें तो खुदा को पा जाओगें, ये कायनाती निजाम पूरा का पूरा इन्सान के हवाले कर दिया जाता है जब ये दो काम कर ले, खुदा ने कितनी कसमे खाकर कहा है,

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا وَنَفْسٍ
وَمَا سَوَّاهَا فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا

सूरह शम्श 1-10

यहो तज्किया इन्सान को ऊपर ले जाता है वरना ये पस्ती मे पड़ा रहता है।
अच्छा ! इन्सान को पस्ती मे क्या चीज ले जाती है ?
इन्सान का अपना वजूद बनाना इसे नीचे ले जाता है, इन्सान का अपना वजूद बनाना ही अपने ऊपर जुल्म करना है कि चोरी करता है, जिना करता है, आग लगवाता है, कत्ल करवाता है, फूट डलवाता है ये सब अमल खराब है तो जिसने अपने वजूद को बनाना यानी तकाजा ए इन्सानियॉ को पूरा करना ही अपना मकसद बनाया हो वो नीचे आ जाता है, अपना वजूद ही हमे हिल्म वाला, एख्लाक वाला, इन्साफ वाला नही बनने देता।
इसलिये सबसे पहला मकसद क्या है ?
सबसे पहला मकसद لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ना दौलत मकसद है, ना गुर्बत मकसद है, ना हुकूमत मकसद है, ना राहत मकसद है, मकसद सिर्फ खुदा की मंशा व मर्जी पर चलना है। अमल की दुरूस्तगी तक पहुँचने का यही रास्ता है कि अल्लाह को अपना मकसद बना लो, खुदा की कसम ! सारे नबियों ने ये बात बतलायी कि पूरी दुनियॉ की मालियत खुदा के यहॉ मच्छर के एक पर के बराबर भी हैसियत नही रखती। हम इसमे से निकलने वाली चीजों को कितना ही सजायें, कितना ही बढ़ायें इन्सान इससे कीमती नही बन सकता, आप अगर पाखाने को सोने और जवाहरात के बर्तन मे रख दो या कुछ भी कर लो तो ये

कीमती नही बन सकता। तुम खुदा को माल से हरगिज नही पा सकते चाहे तुम्हारा एक पैर चॉद पर हो और दूसरा पॉव सूरज पर तब भी खुदा को नही पा सकते, खुदा को चीजों के रास्ते नही पाया जा सकता, खुदा तक पहुॅचने का रास्ता बतलाया है مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰہِ ने। हुजूर सल्ल0 ने जो कहा या किया है वो अमल सारी कायनात से ज्यादा कीमती है, खाने पीने का, सोने जागने का, कमाने और खर्च करने का मकसद खुदा की जात और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल हों, जब ख्वाहिश पूरी हो तो अल्हम्दुल्लिलाह और जब टूटे तो ऐ अल्लाह गरज चौबीस घन्टे का मकसद अल्लाह की जात और रास्ता मुहम्मद सल्ल0 वाला कि لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ मकसद है और مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰہِ रास्ता है।

इन्सानी जिन्दगी के नक्शों में और शरीयत वाले रास्ते मे क्या फर्क है ?

ये गौर करने की बात है कि कामयाबी का रास्ता इन्सानी नक्शों में है या अल्लाह वो नक्शे मे ? इसलिये कि एक रंग इन्सान का है और एक रंग अल्लाह का है।

इन्सान का रंग क्या है ? इन्सान का रंग है लेना और अल्लाह का रंग है देना लेकिन आज हालात क्यों बिगड़े हैं ? हालात बिगड़ने की वजह ये है कि आज इन्सान रंग ए इन्सानी पर जिन्दगी गुजार रहा है। जब इन्सान रंग ए इन्सानी पर जिन्दगी गुजारता है तो फिर ना पूछो कि कैसा खून खराबा होता है जिसकी वजह से ऐसी गड़बड़ पैदा होती है जिसे सारी दुनियॉ मिलकर नही रोक पाती है कि

ऊॅचे दर्जे वाला सोचता है नीचे वाले से कैसे ले और नीचे वाला सोचता है ऊॅचे दर्जे वालों से कैसे ले ?

हुकूमतें सोचती हैं हम आवाम से कैसे ले, ताजिरों से कैसे ले और मजदूरों से कैसे ले ?

जमा किये हुए पानी से कैसे ले और पानी ले जाने वालों से कैसे लें ?

पानी मे मछली का शिकार खेलने वालों से कैसे लें ?

जब मातहत भी लेने पर आ जाये और हाकिम भी लेने पर आ जाये तो हर फर्द का हर फर्द से टकराओ पैदा होता है। हमदर्दी और शराफत खत्म हो जाती है, आज मालदार गरीबों से लेने पर तुले हुए है और गरीब मालदारों से लेने पर तुले हुआ है।

शौहर सोचता है बीबी से कैसे लूॅ,

बीबी सोचती है बेटे से कैसे लूॅ, ये अदावत और खून बहाने का रास्ता है, दिलों का फटना इसी वजह से है।

अल्लाह वाला रास्ता क्या है ?

अल्लाह का रास्ता देने वाला रास्ता है कि तू लेने वाला और मै देने वाला मुझसे ले और इन्सानों को दे मगर इस रास्ते पर चलने के लिये कोई तैयार नही है अगर कुछ ऐसे है भी तो ज्यादा लेकर थोड़ा देने को तैयार है कि लेने का मिजाज है देने का नही, इसको इस्तलाह मे तिजारत कहते हैं। इन्सान तो फकीर है करोड़पति भी फकीर है, गरीब भी फकीर है,

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

अल्लाह तो सिर्फ देते हैं, तुम कम दोगे पर वो तुम्हे ज्यादा देगा अगर तुमने किसी भूखे को खाना खिला दिया, रोते के ऑसू पोछ दिये तो वो तुम्हे इस जमीन से ज्यादा बड़ी जन्नत देगा, अल्लाह से लेकर मख्लूक को देने वाले बनो। लेने का तआल्लुक खलिक से जोड़ो और देने का मख्लूक से, हाकिम महकूम को नफा पहुॅचाये उनसे लेने का इरादा ना करे, अमीर गरीब को और ताकतवर कमजोर को नफा पहुॅचाये उनसे लेने की ना सोचे। ये तरीका अल्लाह ने तुम्हे बहुत कुछ देने के लिये भेजा है, अल्लाह तुम्हारे देने की बुनियाद पर अपनी सारी नेमतें अता फरमायेगें, मख्लूक को देने का नाम एख्लाक है और खालिक से लेने का नाम इबादत है। लेने का मर्कज अलग है और देने का मर्कज अलग, अल्लाह को हम कुछ नही दे सकते, खुदा को कोई क्या देगा अगर सब उसकी पाकी बयान करें तो उसकी शान मे क्या ज्यादती हो जायेगी ? तस्बीह और सज्दा तो उससे लेने के तरीके हैं। तुम सबको नफा पहुॅचाने के लिये कमजोर को, ताकतवर को, अमीर को, गरीब को, कौमों को और मुल्कों को अगर तुम दो तो इसे एख्लाक कहते है, अल्लाह से लेने के लिये मख्लूक को देना अगर किसी को इसलिये एक रोटी खिलायी कि कल को वो हमे आठ रोटी खिलायेगा तो तुमने लुटिया डुबो दी क्यों कि इस ख्याल पर अल्लाह तुम्हे कुछ ना देगा। तुम अगर देने वाले बन जाओ तो खुदा दुश्मन के दिल मे भी तुम्हारी मुहब्बत पैदा कर देगा, अरब वालों ने अपने को अल्लाह के रास्ते पर मोड़ दिया तो अल्लाह ने उनके दिलों को जोड़ दिया।

इस कायनात की हकीकत क्या है ?

ये कायनात खुदा की मख्लूक है इसकी अपनी कोई चीज नही है ये खुद खुदा के खजानों से फायदा उठाती इसलिये ये खुद किसी को कुछ नही दे सकती, ना ये किसी को नफा पहुँचा सकती है और ना नुकसान। सूरज मे रौशनी अपनी नही है रौशनी खुदा के खजाने मे है सूरज उस खजाने से फायदा उठाता है।

खुदा क्या है ?

खुदा वो है जो जिसको चाहे बनाकर दिखा दे और जिसको चाहे बिगाड़ कर दिखा दे, सब पर खुदा का कब्जा है लेकिन खुदा पर किसी का कब्जा नही है। खुदा ने चीजों मे जो रूह की ताकत रखी है इसकी किसी को खबर नही है।

खुदा ने पहली चीज को चीजों के बगैर कैसे बनाया ?

पहले गेहूँ को गेहूँ के बगैर बनाया, नबियों को नबियों के बगैर हिदायत दी, खुदा आज भी किसी भी चीज को चीजों के बगैर पैदा कर सकते हैं। खुदा से लेने का एक रास्ता कायनात वाला है और एक रास्ता है मुहम्मद सल्ल0 के अमलों वाला, कायनात खुदा के खजाने से अपनी हैसियत के मुताबिक लेती है और मुहम्मद सल्ल0 के अमल अपनी शान के मुताबिक लेते हैं एक एक अमल पर बेइन्तेहा लेते है। मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल खुदा ने अपने खजानों से ज्यादा से ज्यादा देने के लिये अता किये हैं, इन्सान मे तमीरी और तख्रीबी दोनो पहलू हैं अगर ये इन्सान अपनी मर्जी पर चला तो हलाक हो जायेगा, लिख लो मेरी इस बात को हाकिम व महकूम, गरीब व अमीर ये सारे के सारे मख्लूक से लेने के मिजाज की वजह से हलाक होगें, अल्लाह जिसे देने के मिजाज पर लायेगा वही कामयाब होगें, उनके सामने सब झुकेगें।

कायनात मे कुछ नही खुदा के खजाने मे सब कुछ है और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल खुदा के खजानों से बेइन्तेहा लेने वाले है, बस हममे कुछ नही खुदा की मंशा मे सब कुछ है इसलिये खुदा की मंशा को अपना मकसद बनाओ। कायनात खुदा से अपने मुकददर का ले सकती है और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल खुदा की कुदरत से खूब लेते हैं लिहाजा मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों को खुदा के खजानों से लेने का सबब बनाओ। इसके लिये हर अमल को चार चीजों पर लाओ तो वो अमल नफा पहुँचाने वाले बन जायेगें। 1 ईमान की हकीकत और उसकी ताकत पर 2 मुहम्मद सल्ल0 वाली शक्ल पर 3 अल्लाह के ध्यान पर 4 अल्लाह की रजा पर तो अब हर चीज इसी चार से ठीक होगी मगर ये चार किस चीज से ठीक होगीं ? ये चार चीज ठीक होगीं चार महीने लगाने से, इसके लिये बतलाओ कौन कौन तैयार है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0
हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0
बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद
18 अक्टूबर सन 1962
अजान को समझो और अपने अमल दुरूस्त करो

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

मेरे अज़ीज़ो ! इस जमाने मे सारी दुनियॉ के लोग एक गलतफहमी का शिकार हैं और इसी गलतफहमी की वजह से दुनियॉ मे मुसीबतों के दरवाजे खुले हुए है, वो गलतफहमी क्या है ? गलतफहमी यकीन की है कि कामयाबी चीजों से मिलेगी, चीजें माल से मिलेगी और माल मेहनत से मिलेगा। इन्सानियत का ये वो रूख है जिस पर सब जिन्दगी गुजार रहे हैं, चाहे नमाजी हो या बेनमाजी सब इसी गलतफहमी का शिकार हैं, माल को मकसद बनाने की वजह से इन्सानियत के अमल दिन पर दिन खराब हो रहे हैं। खुदा की तरफ से इन्सानों की जिन्दगियों के बनने और बिगड़ने के फैसले इन्सानों के अमल पर होते है, जितने भी अम्बिया अलै0 दुनियॉ मे तशरीफ लाये वो इस बुनियाद पर आये कि इन्सानों की कामयाबी और नाकामी चीजों पर नही आमाल पर है, इन्सान अपने अमल दुरूस्त कर ले तो अल्लाह की तरफ से कामयाबियों के हालात आयेगें और अमल खराब होगें तो नाकामियों के हालात आयेगें। अब इन्सान के सामने दो रास्ते है एक का मर्कज बाजार है और दूसरे का मर्कज मस्जिद है। बाजार माल का मर्कज है वहॉ चीजें दिखायी देगीं और चीजों से होता नजर आयेगा इर्सालये उन सब बाजार वालों को अल्लाह मस्जिद मे बुला रहे हैं اَللّٰهُ اَكۡبَرۡ اَللّٰهُ اَكۡبَرۡ अल्लाह बहुत बड़े है, वो इन्सानों के वहम व गुमान से भी बहुत बड़े है फिर दूसरी आवाज लगवा रहे है لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ चीजों से कुछ नही होता एक बड़े से सब होता है। ये आवाज इसलिये लगवायी जा रही है कि परवरिश का और फायदा हासिल करने का तआल्लुक मेरी जात से जोड़ो इसलिये कि जहॉ से होता है वो नजर नही आ रहा है इसके लिये बीच के वास्ते की जरूरत है (जैसे दूरबीन) ताकि तुम्हे नजर आये, वो वास्ता مُحَمَّدًا رَسُوۡلُ اللّٰهِ हैं, इसलिये आवाज लगवा रहे हैं مُحَمَّدًا رَسُوۡلُ اللّٰهِ वो बतायेगे कि सारी कायनात किस तरह अल्लाह के कब्जे मे है, उनकी ला महदूद कुदरत का इस्तेमाल तुम्हे कामयाब बनाने के लिये किस तरह होगा, यही बताने के लिये मस्जिद मे बुला रहे है ''हयया लस्सलाह'' सब एक साथ मिलकर जमा हो जाओ। मस्जिद मे जाड़ने का उन्वान बनाया नमाज को कि अब यहॉ बैठकर समझो ''हयया लल्फलाह'' कि तुम्हे कामयाबी लेने के लिये क्या करना पड़ेगा ? मस्जिद की बुनियाद पर जो कामयाबियॉ तुम्हे मिलेगी वो चीजों की बुनियाद पर नही मिलेगीं बल्कि मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल से मिलेगीं। जिस तरह जिस्म मॉ के पेट मे बनता है लेकिन रूह अल्लाह की तरफ से फरिश्ता लाकर डालता है अगर अल्लाह जिस्म मे रूह ना डालें तो बच्चा मरा हुआ पैदा होगा, जिस्म सारा मौजूद है कि सर से लेकर पैर तक सब मौजूद है लेकिन बेकार है जिसे तुम दफन कर देते हो। इसी तरह दुनियॉ मे फैली हुई चीजें दुनियॉ के नक्शों से बनती हैं पर इसमे कामयाबी और नाकामी अल्लाह की तरफ से डाली जाती है, वो चाहेगें तो शक्लों मे कामयाबी डालेगें और चाहेगें तो कामयाबियों के नक्शों मे नाकामी डालेगें, जिस तरह जिन्दा जिस्म स जब चाहते है रूह निकाल लेते है।

कामयाबियों और नाकामियों के फैसले अल्लाह की तरफ से इन्सान के अमल पर होते हैं, जमीन से जैसे आमाल आसमान पर जायेगें वैसे ही फैसले आसमान से जमीन पर तुम्हारे लिये आयेगें। सबके लिये अल्लाह का यही एक जाब्ता है, हुकूमतों के लिय, सरमायेदारों के लिये, उलेमा के लिये, अवाम के लिये, गराबों के लिये, सबके लिये अल्लाह का यही जाब्ता है,
अगर जिल्लत का फैसला हो गया तो हुकूमतों के नक्शों मे जिल्लत आ जायेगी,
अगर फक्र का फैसला हो गया तो महलों मे फकीर हो जायेगा,
अगर इज्जत और गिना का फैसला हो गया तो झोपड़ियों मे राहत मिल जायेगी,

जिस तरह रूह का तआल्लुक शक्लों से नही है बल्कि अल्लाह से है इसी तरह कामयाबी और नाकामी का तआल्लुक शक्लों से नही बल्कि अल्लाह से है, शक्लों मे हालात खुदा की तरफ से डाले जायेगें शक्लों मे आने वाले हालात का तआल्लुक तुम्हारे अपने अमलों से है।

''हयया लस्सलाह'' और ''हयया लल्फलाह'' का मतलब ये है कि शक्लों से निकल कर अल्लाह के घर मे आओ और यहॉ बैठकर अपने अमलों को ठीक करो, खुदा यहॉ तुम्हे सिर्फ चार रकआत नमाज के अमल के लिये नही बुला रहे हैं बल्कि मस्जिद को मर्कज बनाकर आमाल चलाने का निजाम बनाने के लिये बुला रहे हैं। अगर अमल ठीक कर लोगे तो फिर तुम्हारे पास शक्लें चाहे जैसी हो खुदा की तरफ से उनमे कामयाबियों के हालात आ जायेगें, चाहे तुम्हारे हाथों मे पुलाव की शक्ल हो या रोटी चटनी की अगर सर से लेकर पैर तक के अमल तुमने ठीक ना किये तो हालात की खराबी तुम्हारी चीजों मे आ जायेगी। अम्बिया किराम इन्सानो को चीजें बनाने की तरफ मुतवज्जाह नही करते थे बल्कि जहॉ तक हो सकता था चीजों से हटाने की कोशिश करते थे कि उन शक्लों से हटो और सर ये लेकर पैर तक के अमलों को ठीक करो अगर तुमसे कोठियॉ छिन जायें, ओहदों से हटा दिया जाये, माल छिन जाये, मकानों से निकाल दिया जाये, खेतियॉ छिन जायें, यहॉ तक कि तुम्हारे पास एक कुर्ता भी ना बचे अगर तुम्हारे अमल ठीक हैं तो तुम्हारे लिये कामयाबियों के फैसले होगें, यहा तक कि सारे मुल्क का नक्शा ऐसों के लिये बदल जायेगा और अगर अमल ठीक ना हुए तो फिर चाहे महलों मे रहते हो, ओहदों की कुर्सियों पर बैठे हो, माल हाथ मे हो, ऐश के नक्शों मे हो तो उन सारे नक्शों मे खुदा नाकामी डाल देगें।

इसलिये तुम अपने आपको चीजों से निकाल कर अमलों के ठीक करने पर आओ फिर दुनियॉ देखेगी कि खुदा की कुदरत अमल वालों के साथ कैसे इस्तेमाल होती है। अगर तुम ऐसे बन गये तो लोग तुम्हारे पास ऐसी जिन्दगी सीखने के लिये हवाई जहाजों ये चलकर आयेगें, खुदा ने पहले भी बाराहां ऐसा करके दिखलाया है कि आदम अलै0 से लेकर आज तक दिखला रहे हैं। इसके लिये ये ऐलान है कि नमाज के लिये आकर मस्जिद के आमाल को बुनियाद बना लो तो दोनों जहॉन की कामयाबी ले लो, ये नही कहा कि जिक्र के लिये आ जाओ और कामयाबी ले जाओ बल्कि जिक्र के बारे मे ये कहा कि जिक्र को आ जाओ दिल को इत्मेनान मिलेगा। नमाज के अलावा किसी और अमल पर दुनियॉ व आखिरत की कामयाबी का वादा नही फरमाया है इसलिये कि नमाज सारे आमाल का मज्मुआ है कि नमाज के अमल मे सर से लेकर पैर तक के हर आजा को अल्लाह के हुक्म पर चलना सिखाया जाता है और फिर मस्जिद को मर्कज बनाकर ईमान और अमल की मेहनत चलायी जाती है। नमाज के अलावा दूसरे किसी अमल के साथ ऐसी कोई मेहनत नही जुड़ी है। जिन्दगी मे खुद के ऐतबार से आमाल आ जायें और हमारी जिन्दगी मे जितने ऐतबारात हैं वो सब खत्म हो जाये तो फिर चौबीस धंटे की जिन्दगी मे हमारे जितने मसाएल है खुदा अपनी कुदरत से पूरा कर देगें। इसलिये हर रोज पॉच दफा ये आवाज लगवायी जा रही है ताकि कयामत मे कोई कह ना सके कि हम जानते नही थे, वहॉ तो कहा जायेगा कि अरे अहमक ! पचास साल तो जिन्दा रहा क्या हर रोज पॉच दफा ये आवाज सुनकर अजान को नही समझ सका और अगर अजान को समझा था तो बता उस पर कितना अमल किया ?

तू ने आमाल को कितना ठीक किया कब्र मे इसी बुनियाद पर सवाल होगें। मस्जिद से मुताल्लिक बहुत से आमाल है सिर्फ चार रकआत नमाज का ही अमल नही है खूब समझ लो सिर्फ चार रकआत नमाज के अमल पर खुदा कुछ भी नही करेगें खुदा खुद फरमा रहे हैं

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ
وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ
وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ
الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

सूरह बकरा 177

सबसे पहले यकीन ठीक करो اللّٰهُ اَكۡبَرۡ वाला यकीन पैदा करो, अब बताओ यकीन कैसे ठीक होगा ? क्या इस हौज के पानी से ठीक हो जायेगा ? ये यकीन तब ठीक होगा जब मस्जिद के माहौल मे बैठकर वो माहौल पैदा करो जिससे यकीन बनता है। जिस तरह नमाज का सबसे पहला अमल वुजू कि वुजू करके जिस्म को पाक करो इसी तरह यकीन बनाने का सबसे पहला

अमल रूह को पाक करो और रूह पाक होगी ईमान व यकीन की बात कहने सुनने से और पाक होगी ऐसी नमाज बनाने से जिसमे रूह का तआल्लुक अल्लाह से जुड़ रहा हो,

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ

खुशखबरी सुना दो उन नमाजियों को जा ईमान वाले खुशूऊ व खुजूउ वाले है, सारे नमाजियों को कामयाबी नही मिलेगी बल्कि उन नमाजियों को कामयाबी मिलेगी जिनके यकीन चीजों से हटकर अल्लाह पर आयें, मुल्क से, माल से, हथियार से, ऐटम से हटकर अल्लाह पर आयें। नमाज का अमल तो हुआ दुनियॉ मे पर यकीन ओर खुशूऊ की कैफियत पर तुम्हे जन्नत मिलेगी, असल ये यकीन है कि माल से असबाब से कामयाबी नही मिलेगी बल्कि नमाज का अमल करके अल्लाह से मॉगने पर कामयाबी मिलेगी। इस यकीन के साथ मस्जिद मे आओ और ईमान का माहौल बनाओ और दुनियॉ भर मे फिर फिर कर मस्जिदों म ईमानी माहौल बनाओ।

वरना आज के माहौल मे अहमको के बारे मे सुन रहे हो कि ये बड़े और वो बड़े और ये भी सुन लिया कि अल्लाह बड़े तो अब ये समझा कि अल्लाह भी ऐसे ही बड़े हैं जैसे ये बड़े हैं इसलिये नमाज भी पढ़ो और इन बड़ो का ख्याल भी रखो। इसके तसव्वुर मे भी नही आया कि अल्लाह कितने बड़े है, हालॉकि दोनो बड़ाईयों मे फर्क है कि एक आदमी के पॉच लड़के है वो लड़को का तआरूफ करा रहा है कि एक ये मेरा बच्चा है और ये वाला इससे बड़ा और ये वाला इससे बड़ा और ये वाला सबसे बड़ा है। अरे ! ये बड़ाई और है ये बच्चा होने की वजह से छोटा रहेगा, तुम तो एक डिब्बे को भी बड़ा डिब्बा कहते हो, पहाड़ को भी बड़ा पहाड़ कहते हो, जमीन आसमान को भी बड़ा कहते हो और अल्लाह को भी बड़ा कहते हो तो इस बड़ाई को कहने से तुम्हारा क्या मतलब है, कौन बड़ा ह ?

अल्लाह के सामने सारे जमीन व आसमान मिलकर एक जर्रा भी नही हैं, तुम मस्जिद मे बैठकर अल्लाह की बड़ाई को बोलो, अल्लाह की बड़ाई को सुनो, अल्लाह की बड़ाई को पढ़ो और अल्लाह की बड़ाई का मुराकबा करो कि ईमान की मज्लिस मे आओ, इल्म के हल्को मे बैठो और जिक्र करो, तब समझ मे आयेगा कि उनकी बड़ाई क्या है ? ये सब मस्जिद के आमाल है। अल्लाह के 99 सिफात वाले नाम हैं वो हर सिफात मे बड़े है, अल्लाह अपनी कुदरत के साथ खालिक हैं शक्लों के साथ नही कि मियॉ बीबी होगें तो बच्चा पैदा होगा, मियॉ बीबी से बच्चा पैदा करना ये अल्लाह की आदत है इसको कुदरत नही कहते, कुदरत ये है कि वो मियॉ बीबी के बगैर बच्चा पैदा करते हैं। अल्लाह अपनी कुदरत के लिये शक्लों के मोहताज नही है वो اللّٰهُ الصَّمَدُ हैं चीजें अल्लाह की मोहताज है। ये ईमान तब आयेगा जब मस्जिद मे बैठकर अल्लाह की सिफात को सुनेगा, उनकी कुदरत और ताकत के इस्तेमाल को सुनेगा, उनके फैसले पर कौमे कैसे तबाह हो गयी, उनके फैसले से किस तरह मुल्कों के नक्शे बदल गये। जब नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉगेगा तो जो ऊँचे हैं उनको नीचे कर देगें, जो हस रहे हैं उन्हे रूला देगें फिर तुम अपने यकीन के ऐतबार से सब कुछ बदलता हुआ देखोगे। नमाज का नम्बर चौथा है पहले اللّٰهُ اَكْبَرُ फिर لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ की गवाही फिर مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ की गवाही अब ‘‘हयया लस्सलाह’’ इसलिये सबसे पहले अल्लाह की बड़ाई का यकीन पैदा करो, तौहीद पैदा करो कि वो तन्हा बड़े है, अल्लाह के अलावा जो कुछ है उसकी छोटाई का तसव्वुर पैदा करो। अल्लाह के अलावा को छोटा बोलने से ही अल्लाह की बड़ाई का यकीन पैदा होगा, मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल पर जिन्दगी को लाना कि सर से लेकर पैर तक के हर आजा के अमल को ठीक करते हुए नमाज पढ़कर अल्लाह से मॉगो तो जो मॉगोगे अल्लाह करके दिखायेगें ‘‘हयया लस्सलाह’’ से पहले जितनी आवाजे सुन रहे हो वो सब यकीन और अमल बनाने की आवाजे है ‘‘हयया लस्सलाह’’ उसके बाद है।

अब इल्म हासिल करो कलिमे और नमाज का कि कलिमे नमाज से क्या क्या हो सकता है ? सना से क्या होगा ? तकबीर से क्या होगा ? रूकुउ से क्या होगा ? सज्दे से क्या होगा ? हुजूर सल्ल0 ने हर चीज के बारे मे बतला दिया है अभी तक तुमने बाहर की चीजों से होता देखा है, अभी तुम कुरआन व हदीस से होना नही जानते। दिल की ऑखे खोलकर मस्जिद मे आकर बैठो और अल्लाह के जिक्र से ऐसा ध्यान पैदा करो कि बाहर देखने से जो ध्यान आता है वो बिल्कुल निकल जाये और हुजूर सल्ल0 ने जो बतलाया है बगैर देखे उसका ध्यान जम जाये। जो ध्यान इन्सान के अन्दर ऑखों से देखकर बनता है उसका नाम गफलत है और हुजूर सल्ल0 ने जो बतलाया बगैर देखे उसका ध्यान आना इसका नाम जिक्र है। ईमान की मज्लिसों मे

बैठकर ईमान को सीख लो, इल्म की मज्लिसों मे बैठकर इल्म को सीख लो, जिक्र की मज्लिसों मे बैठकर ध्यान को सीख लो फिर नमाज पढ़ो,

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ

अन्दर बाहर हर तरफ से रूख फेर कर मैं अल्लाह की तरफ रूख कर रहा हूँ अब अपने सारे मामलात का तआल्लुक अल्लाह से जोड़ो फिर सना पढ़ो, उनकी सिफात बयान करो फिर पढ़ो

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ

फैसले वाले दिन का मालिक है फैसले तो वो हर रोज देता है लेकिन थोड़े दिन के लिये फिर बाद मे फैसला बदल भी देता है लेकिन कयामत के दिन जो फैसला देगा वो हमेशा के लिये होगा वो फैसला कभी बदला ना जायेगा। वो हमेशा के लिये बहुत बेहतर परवरिश होने का फैसला देगा मगर इस पर देगा إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कि उसी की मानकर और उसी से मॉगने पर मिलेगा, जो हम मॉगेगें उसी पर फैसला देगा और उससे भी ज्यादा देगा। बस अब चीजों से हटकर अल्लाह के हुक्मों पर मेहनत करो, कमाना सीखने की चीज नही बल्कि अल्लाह के हुक्मों पर चलना सीखने की चीज है। इसलिये अल्लाह के हुक्मों पर मेहनत करो वरना तुम्हारी छोटी छोटी हरकतों से तुम्हारा मुल्क खतरों मे है किसी वक्त भी नाकामियों के फैसले हो सकते है, अब अगर लोग मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल पर जिन्दगी को लाने की कोशिश नही करेगें तो सारे आलम के हालात की खराबी का फैसला खुदा कर देगें। ऐसे फैसले होगें कि सबको छटटी का दूध याद आ जायेगा, आलम के हालात पलटने को हैं, इन्सानो का खून बहने को है, तुम इसकी मेहनत करो कि अल्लाह का फैसला बदल जाये, हमारे बचाओ और हमारी फलाह का फैसला हो जाये। इसके लिये वक्त मॉगा जा रहा है कि निकल कर ये मेहनतें कर लो और अल्लाह से कह कर अपने बचाओ के फैसले करा लो, लोग हजार काम करने के लिये तैयार है पर इस काम को करने की उनको फुर्सत नही, इन हजार कामों से फुर्सत के दरवाजे नही खुलेगें, हुजूर सल्ल0 की मेहनत के तरीके पर ही आलम के हालात बदलेगें अब खड़े होकर बताओ इसके लिये कौन कौन तैयार है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0
हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0
बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद
19 अक्टूबर सन 1961
हकीकी नूर हासिल करने का तरीका

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! जमीन व आसमान के अन्दर की सारी चीजें एक तयशुदा वक्त के लिये बनी है, इन सबको अपने अपने वक्त पर खत्म होना है, इन खत्म होने वाली चीजों को देखने के लिये अल्लाह ने खत्म होने वाली रौशनी दी है। रौशनियॉ दो हैं - एक रौशनी वो है जो चॉद और सूरज से आती है, ये रौशनी वक्ती है और सिर्फ कयामत तक के लिये है, जब कयामत कायम होगी तो इसकी रौशनी सलब कर ली जायेगी अगर चॉद और सूरज की रौशनी ना हा तो ये चीजें तुम्हे नजर नही आयेगीं फिर ये इन्सान सोने चॉदी की ईट पर थूक देगा या इनके ऊपर से पैर रखते हुए चला जायेगा, रौशनी ना होने की वजह से इसे खूबसूरती और बदसूरती नजर ना आयेगी और ना ही ये जहर और तिरयाक को पहचान सकेगा। ऐसा होन पर इन्सान को चीजें नजर नही आयेगीं, जब चीजें नजर नही आयेगीं तो चीजों से होता हुआ भी नजर नही आयेगा तो उनकी तलब भी पैदा ना होगी। इन्सान को इस खत्म होने वाली रौशनी मे खत्म होने वाली चीजें दिखती है जिसकी वजह से इन्सान के अन्दर चीजों की तलब पैदा होती है फिर इन्सान इन्ही चीजों को हासिल करने के लिये अपनी जान लगा देता है। इसी तरह अल्लाह तआला ने एक दूसरी किस्म की रौशनी का सिलसिला कायम किया है जिसकी रौशनी मे आमाल दिखायी देते है, हराम हलाल दिखायी देता है, बदअमलियों की और आमाल ए सालिहा की कीमत दिखायी देती है, आखिरत दिखायी देती है, ये रौशनी अल्लाह का नूर है

اللّٰہُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

ये नूर हमेशा रहने वाला है जो कभी खत्म ना होगा, इस नूर मे खत्म होने वाली चीजें नही दिखायी देती बल्कि इस नूर मे हमेशा के लिये बाकी रहने वाली चीजें दिखायी देती हैं, इस नूर मे चीजों से होना दिखायी नही देता बल्कि आमाल से होना दिखायी देता है। जब ये नूर रूह मे आता है तो रूह नूरानी बनती है, इन्सान के साथ जो कुछ मामला किया जाता है वो रूह के नूरानी या स्याह होने की बुनियाद पर किया जाता है। जिस इन्सान की रूह नूरानी होगी उसको राहत दी जायेगी, उसको कामयाबियों से नवाजा जायेगा और उसका इकराम होगा लेकिन जिस इन्सान की रूह स्याह (काली) होगी उसको तकलीफ और मुसीबतों मे डाला जायेगा, उसको जलील और रूसवा किया जायेगा। इन्सानों को तीन आलमो मे कामयाबियों या नाकामियों मे रहना पड़ेगा और इन तीनो जगह की जिन्दगी अलग अलग है, पहली जिन्दगी आलम ए दुनियॉ की जहॉ बहुत थोड़े दिन रहना है फिर दूसरा ठिकाना आलम ए बर्जख का जहॉ कयामत तक इन्सान को रहना है और फिर हमेशा के रहने के लिये आलम ए आखिरत, इन तीनों की नवईयत जुदा जुदा है। दुनियॉ मे इन्सान अपने जिस्म से जो अमल कर रहा है उसका असर रूह पर पड़ता है, आमाल नूरानी हैं तो रूह नूरानी बन रही है, रूह मे चमक आ रही है, खुशबू आ रही है, कयामत मे रूह का नूर इसके आगे आगे चलेगा।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ

सूरह हदीद 12

कयामत के दिन आदमी अपने नूर की रौशनी मे चलेगा जिस तरह कार अपनी रौशनी मे चलती है किसी दूसरी कार की रौशनी मे नही चल सकती, कयामत मे बेनूर वाले नूर वालों से कहेगें जरा ठहर जाओ हम भी तुम्हारे नूर मे चलेगें,

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا

सूरह हदीद 13

कहा जायेगा वापस लौटो और अपना नूर खुद लेकर आओ, यहॉ दूसरे की रौशनी मे नही चला जाता है अपने अपने नूर मे चला जाता है फिर वो बेनूर लोग चिल्लायेंगें अरे भाई ! क्या हम दुनियॉ मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम तालीम मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम मदरसे मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम गश्त मे तुम्हारे साथ नही थे ? क्या हम तब्लीग मे तुम्हारे साथ नही थे ? तुमने ऐसा क्या किया कि तुम्हारे पास तो नूर है और हमारे पास नही, वो जवाब देगें

قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ

सूरह हदीद 14

तुम्हारे नक्शों ने तुम्हे फित्नों मे डाल दिया, तुम्हे धोखे मे डाल दिया, तुम दुनियां के लिये कर रहे थे तुम्हारी नियत खराब थी, तुमने अल्लाह के वास्ते अमल नही किया। मेरे अजीजों ये नूर उन लोगों को मिलता है जो अल्लाह के वास्ते करते हैं, ये नूर हकीकत है लेकिन ये नूर ना होने की वजह से आज हमे नमाज से होता दिखायी नही देता, आमाल ए सालिहा की कीमत दिखायी नही देती, कुरआन की तिलावत मे नफा नजर नही आता। जब ये नूर हासिल हो जायेगा तो मुल्क व माल के नक्शों मे नफा नजर नही आयेगा, ओहदों मे कामयाबी दिखायी नही देगी, सिर्फ आमाल मे कामयाबी दिखायी देगी फिर ये चीजों की परवाह नही करेगा चीजें चाहे बने या बिगड़े। ये तो अमल बनाने मे लगेगा अगर ये हकीकी नूर नही मिला तो इसे मुल्क व माल के नक्शों मे कामयाबी दिखायी देगी फिर आदमी अपने अमल बिगाड़ते चला जायेगा, नाकामियों मे घिरता चला जायेगा अगर बगैर तौबा किये हुए मर गया और इस अन्धेरे को जो इसके अन्दर है रो रोकर दूर ना किया और मेहनत करके वो नूर हासिल ना किया तो बड़ी मुसीबत मे फसेगा।

कुरआन के एक एक हर्फ मे अल्लाह ने नूर रखा है, इतना नूर रखा है कि अगर एक हर्फ के नूर को जाहिर कर दिया जाये तो सूरज काला नजर आयेगा लेकिन इन्सान की रूह मे ये नूर कुरआन पर मेहनत करने से आता है सिर्फ कुरआन को पढ़ लेने या जान लेने से ये नूर नही आता बल्कि अल्लाह ने कुरआन पर जिस तरह मेहनत करने को बतलाया है उस तरह मेहनत करने से ये नूर आता है, यही वजह है कि आज कुरआन पढ़े हुए बहुत से लोग बुरे आमाल मे मुब्तिला है। शुरू जमाने मे इसका बहुत एहतमाम किया जाता था कि

बुरे अमल वाले इन्सान से कुरआन ना पढ़ा जाये,

किसी फासिक से हदीस ना पढ़ी जाये,

जुल्मत वालों की लिखी हुई कोई किताब ना पढ़ी जाये, चाहे उसने तफसीर लिखी हो या हदीस लिखी हो, आजकल लोग सीरत पर काफिरों से तकरीर कराते हैं। अरे गधे ! उसकी अच्छी बातों से भी तुम्हारे अन्दर नूर नही बल्कि जुल्मत पैदा होगी। इसलिये खाली कुरआन को पढ़ लेने से अमल नही आयेगा चाहे सारी फिक्ह, तफसीर, हदीस और फलसफा चाट डालो अमल नही आयेगा, अमल तो उस वक्त आयेगा जब तुम्हारे अन्दर अल्लाह का नूर आयेगा और ये नूर कुरआन और हदीस पर सही मेहनत करने से आता है। जब ये नूर अन्दर आ जायेगा तो चीजो से होना नजर नही आयेगा बल्कि अमल से होना नजर आयेगा, जिस तरह सूरज की रौशनी मे अगर बिजली का बल्ब जला दिया जाये तो बल्ब की रौशनी दिखलायी नही देती सिर्फ धूप ही धूप नजर आती है। इसी तरह जब हकीकी नूर आता है तो बाकी रौशनियॉ दिखलायी नही देती फिर उसको सूरज की रौशनी मे जो कुछ दिखायी देता था अब इसे वो दिखलायी नही देगा, इसलिये इस नूर को हासिल करना अमलों का इल्म हासिल करने से भी ज्यादा जरूरी है कि दीन का इल्म हसिल करने से ज्यादा जरूरी इस नूर को हासिल करना। ये नूर अगर आपके दिल मे आ गया तो दुकान और खेत मे कामयाबी नही दिखायी देगी बल्कि दुकानों और खेतों मे फिरते हुए अच्छे अमलों मे कामयाबी नजर आयेगी फिर आप दुकानों और खेतों के ऐतबार से अमल नही करेगें। आज सूद और झूठ से चीजे बन रही हैं लेकिन अमल बिगड़ रहे है, जब आपको अमलों मे कामयाबी नजर आयेगी तो फिर आप झूठ नही बोलेगें, सूद नही लेगें, धोखा नही देगें, चाहे चीजें रहें या ना रहें अगर आपने कामयाबी वाले अमलों को किया तो ये नूर और बढ़ जायेगा और अगर आपकी चीजें छिन भी गयीं तो अल्लाह आपको बगैर कमाये देगा। अगर आपने चीजों के ऐतबार से अमल खराब कर दिया फिर बावजूद कमाईयों के आप नाकामियों मे फसेगें और मुसीबतों से पाला पड़ेगा तो सबसे पहला मसअला इस नूर के हासिल करने का है अगर ये नूर हासिल नही किया और जमीन व सामान के चक्कर मे पड़ रहे और माल हासिल करने मे लगे रहे तो खेत आपके हाथ मे आ जायेगा, दुकान आपके हाथ मे आ जायेगी और सब कुछ हाथों मे लेकर ये हाय हाय करता फिरेगा अगर ज्यादा गड़बड़ की तो खुदा किसी दिन सैलाब या जलजले लाकर इन नक्शों को तोड़ देगा।

فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ

सूरह बकरा 266

जब आमाल वाले बनेगें तो लोगों के हाथों से जो नक्शे बन रहे है या हुकूमतें जो नक्शे बना रही हैं या ये सरमायेदार जो नक्शे बना रहे है, ये सबके सब तुम्हारे सामने धड़ाम से टूट जायेगें। इसलिये सबसे पहला मसअला नूर आने का है कि हमारे दिल मे अल्लाह का नूर आ जाये ताकि कामयाबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 के अमलो मे दिखलायी देने लगे।

ये नूर कहॉ मिलता है ?

ये नूर मस्जिदों मे मिलता है कि इस नूर को लेने के लिये मस्जिदें बनायी गयीं,

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ

सूरह नूर 36

ये नूर उन घरों मे मिलता है जिनमे खुदा का तज्किरा किया जाता है, नमाजों का अमल होता है यानी ये नूर मस्जिद मे मिलता है।

رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ

सूर नूर 37

लेकिन इस घर मे आने वाले हर शख्स को ये नूर नही मिलता, ये नूर सिर्फ उन्ही मस्जिद आने वाले लोगों को मिलता है जिनकी तिजारत और दुनियॉ के मशगले अल्लाह के तज्किरे करने से नही रोकते या नमाजों को कायम करने से नही रोकते और ये आने वाले उस दिन से डरते हैं जिस दिन दिल पलट दिये जायेगें, आखें पलट दी जायेगीं

يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ

सूरह नूर 37

जो बाहर का मसअला छोड़कर मस्जिद मे ना आये उनकी मिसाल क्या है ?

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

सूरह नूर 39

काफिरों के अमल ऐसे हैं जैसे रेत कि जिसे देखकर (रेत दूर से दिखने पर पानी जैसी नजर आती है) प्यासा पानी समझकर दौड़ता है और जब उस रेत के करीब पहुँचता है तो पानी आगे दिखायी देता है, करीब पहुँचकर फिर आगे दौड़ता है यहॉ तक कि दौड़ते दौड़ते प्यासा मर जाता है अगर इन्सान मुल्क व माल पर मेहनत करता रहा तो उसे कामयाबी का धोखा दिखायी देता रहेगा कि पॉच साल मे ये करूँगा और दस साल मे ये करूँगा लेकिन एक दिन का तूफान या जमीन पर जलजले का एक झटका, एक लम्हे मे इसके सोचे हुए सारे प्लान पर पानी फेर देगा। इसलिये कि तुम प्लान वालों के साथ हो अमल वालो के साथ नही हो अगर आज मुल्क व माल वाले यूँ प्लान कर दे कि इतनी जमीन ले लो और खूब खाओ कमाओ, खर्चा भी हमसे लो तो तुम इस ऐलान पर ऐसे दौड़ोगे कि खुदा ने ऐलान फरमाया है। तुम अभी प्लान वालों मे हो, अमल वाले नही बने क्यों कि तुम्हे ये पानी ही दिखायी देता है पर हकीकत मे जिसे तुम पानी समझ रहे हा ये रेत है और इतना ही नही

وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

खुदा इसका बहुत जल्द हिसाब लेगें कि नेमेतों से फायदा भी नही उठाया और हिसाब अलग दो, खुदा ने काफिरों के अमल की एक मिसाल और दी है

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ

सूरह नूर 40

इस आयत मे अल्लाह ने काफिरों के अमल से पैदा होने वाले अन्धेरों की मिसाल दी है कि ऐसा अन्धेरा जो रात को गहरे समन्दर मे होता है जब कि ऐसा तूफानी मौसम हो कि मौज के ऊपर मौज और मौजों के ऊपर गहरे काले बादल, इतना अन्धेरा कि अपना हाथ भी दिखायी नही देता। अल्लाह जिसे अपना नूर ना दे तो उसे ये नूर कहीं और से नही मिलेगा,

أَوَ مَن كَانَ مَيْتاً فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُوراً يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ

فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ

(सूरः अनआम-123)

ऐसा शख्स जो पहले मुर्दा था फिर हमने उसको जिन्दा बना दिया और हमने उसको एक ऐसा नूर अता कर दिया जिस नूर को लेकर वो हमारे बन्दों के बीच चलता फिरता है। क्या ये उस शख्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत ये है कि वो अंधेरियों मे हो और उन अंधेरियों से निकलना ही नही चाहता ?

ये नूर दुनियॉ की चीजों से नही मिलता बल्कि इस नूर को आसमानों के ऊपर से हासिल करने की तीन शर्ते है,
पहली शर्त यकीन जमाकर अमल करो कि काम अमल से बनेगें, कामयाबी अमल से मिलेगी।
दूसरी शर्त अमल सिर्फ अल्लाह के लिये हो।
तीसरी शर्त अमल हुजूर सल्ल0 जैसा हो।
यानी ईमान, एख्लास और इल्म, जब इन शर्तो को पूरा करते हुए अमल किया जायेगा तब नूर मिलेगा अगर अमल को इन शर्तो के साथ पूरा ना किया गया तो सिर्फ अमल करने से ये नूर ना मिलेगा। जितना जितना इन शर्तो पर अमल करता चला जायेगा उतना उतना ये नूर बढ़ता चला जायेगा यहॉ तक कि इसकी रूह जगमगा उठेगी, अब जहॉ इसे कोई जरूरत पड़ी बस दो रकआत नमाज का अमल करके अल्लाह से मॉग लेगा, जहॉ कोई मुसीबत पड़ी सदका देकर बलाओं को दूर कर देगा, जहॉ कोई परेशानी आयी अल्लाह के जिक्र मे मश्गूल हो जायेगा, जहॉ कोई खौफ या खतरा नजर आया ये झट से मस्जिद की तरफ दौड़ेगा कि लोग हुक्काम की तरफ दौड़ेगें, हुक्काम सामान की तरफ दौड़ेगें और ये मस्जिद की तरफ दौड़ेगा। जिस दिन तुम पर अमलों से लेने का दरवाजा खुल जायेगा तो ये सारी हुकूमतें तुम्हे अहमक नजर आयेगीं, एक दिन एक आदमी यहॉ मस्जिद के बाहर आने जाने वालों से कागज पर दस्तखत करा रहा था, पूछने पर बतलाया कि हम ये कागज रूस और अमरीका भेजेगें ताकि ये लोग दुनियॉ मे कहीं अपने खतरनाक हथियार का इस्तेमाल ना करे। उस बेवकूफ शख्स से पूछो कि तुम्हारे पास तो सिर्फ एक डन्डा है पर उस डन्डे को जुल्म करने मे इस्तेमाल करने से तुम नही रूकते तो अपने हथियार को इस्तेमाल करने से रूस और अमरीका भला क्यों रूक जायेगें ? हॉ मैं जो तुम्हे बतला रहा हूँ तुम अगर जरा सा इस पर आ जाओ तो ये रूस और अमरीका के सारे हथियार बेअसर हो जायेगें। तुम जरा सा अगर हमारी बात मान जाओ तो हम रूस और अमरीका को चैलेजं करेगें कि तुम अपने ऐटमबम दिल्ली मे गिराओ तो ऐटमबम गिरने से यहॉ कुछ ना होगा बल्कि यहॉ ऐटमबम और ऐटमबम गिराने वालों की लाशें दिखायी देगीं, तुम अमल वाले लोग यहॉ ये मंजर अपनी आखों से देख रहे होगे कि बेअमल ऐटमबम गिराने वाले अपने ऐटमबम के साथ यहॉ कैसे तड़प रहे हैं कि उन्ही की जूती और उन्ही का सर।
इसलिये तुम कुरआन पर अमल करने वाले बनो तब ये नूर तुम्हारे अन्दर आयेगा, हमारे अन्दर ये नूर आना शुरू हो इसके लिये खुदा ने पहले कुछ अमल दिये हैं जिन अमलों के करने से ये नूर हमारे अन्दर आना शुरू होगा तो वो पहले करने के क्या अमल हैं ? ये पहले करने के अमल वही हैं जिन्हे हम तब्लीग मे बताते ह जिसमे सबसे पहले لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ के यकीन की और अमल को ठीक करने की दावत कि दावत के जरिये पहले खुद इस कलिमे का यकीन सीखो और अपने अमल ठीक करो फिर दूसरों को भी कलिमे का यकीन सिखलाओ कि ऐटम से नही होगा, राकेट से नही होगा, दुनियॉ के किसी नक्शों से नही होगा सिर्फ अल्लाह से होगा, इसका नाम है لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ पर ये याद रखना कि कलिमे का बोल किसी शिर्कत के साथ कुबूल नही होता, इसके लिये तौहीद लाना पड़ेगा कि अमरीका से भी होता है, रूस से भी होता है, राकेट से भी होता है और अल्लाह से भी होता है, ये कुबूल नही होगा या फिर अल्लाह किले से मेरी हिफाजत करेगें, हथियार से मेरी हिफाजत करेगें नही बल्कि अल्लाह अपनी कुदरत से मेरी हिफाजत करेगें ये कुबूल होगा इसलिये तौहीद जरूरी है। अल्लाह मुझे कामयाब करेगें माल से, अल्लाह मुझे कामयाब करेगें शक्लों से यह भी शिर्क है, اللَّهُ الصَّمَدُ क्यों कि अल्लाह तो समद हैं वो शक्लों से बेनियाज हैं, वो शक्लों के बगैर अपनी कुदरत से हिफाजत करते है, यह है वो दावत जिसे अम्बिया अलै0 लेकर आते थे। इसलिये आज जब मैं दावत के अमल मे लगूँगा तो मेरी आमदनी टूटेगी, आमदनी के टूटने पर अल्लाह मेरा खर्चा उठाएगें, जब हम इस यकीन की दावत देगें तो ये नूर हमारे अन्दर आयेगा और कामयाबियों के दरवाजे खुलेगें।
मूसा अलै0 ने किस कौम को दावत दी थी ?
मूसा अलै0 ने नबियों की औलाद बनी इसराईल को दावत दी जो कौम पहले मुसलमान थी पर नस्ली मुसलमान होकर रह गये थे।

मूसा अलै0 ने बनी इसराईल को क्या दावत दी ?

मूसा अलै0 ने बनी इसराईल से कहा कि जब तुम लोग अल्लाह को मानते हो तो चीजों पर भरोसा ना करो बल्कि अल्लाह पर भरोसा करना सीखो,

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ

सूरह यूनुस 84

तुम भी इसी की दावत दो कि जब अल्लाह को मानते हो तो उसकी कुदरत को अपने लिये इस्तेमाल करो, कुदरत मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल पर इस्तेमाल होगी लेकिन कुदरत को इस्तेमाल करने से पहले कुदरत का यकीन सीख लो और कुदरत का यकीन पैदा होगा शक्लों की तरदीद करने से।

क्या मतलब है शक्लों की तरदीद करने से ?

शक्लों की तरदीद ये है कि अल्लाह किसी शक्ल के मोहताज नही हैं वो जो कुछ करते हैं अपनी कुदरत से करते हैं वो भैंस बनाने के लिये भैंस के मोहताज नही हैं, पहली भैंस कैसे बनायी ? पहला गेहूँ कैसे बनाया ? अल्लाह ने हर चीज की इब्तेदा अपनी कुदरत से की है और आज भी उसी कुदरत के मालिक हैं। कुदरत अल्लाह की सिफत है, अब चाहें तो गेहूँ से गेहूँ बनाकर दें या मिटटी को गेहूँ बना दें, हर चीज उसके हुक्म से वजूद मे आती है इसलिये शक्ला से शक्लों के बनने की तरदीद करो, आज जो कुछ शक्लों से होता नजर आ रहा है, वो शक्लों से नही बनता अल्लाह के चाह लेने से बनता है। तुम शक्लों के बीच मे खड़े होकर जोर से आवाज लगाओ,

"ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु, लहुल्मुल्को व लहुल्हम्दो वहुवा अला कुल्ली शैइन कदीर"

चॉदनी चौक के बाजार मे एक बार ये कलिमा जोर से कहो तो दस लाख गुनाह माफ होगें, दस लाख नेकियॉ लिखी जायेगी और दस लाख दरजात बुल्नद हो जायेगें। अब अगर इसी कलिमे को चुपके चुपके मस्जिद के कोने मे बैठकर पढ़ो तो दस गुनाह माफ होगें, दस नेकियॉ लिखी जायेगी और दस दरजात बुल्नद हो जायेगें ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिये कि मस्जिद मे चीजें सामने नही है तब चीजों से ना होना बोल रहो और बाजार मे चीजें चमक दमक के साथ तुम्हारे दिल को अपनी तरफ खींच रही हैं तुम उस मुखालिफ माहौल म खड़े होकर बाजार मे कह रहे हो कि "इन चीजों से नही हो रहा अल्लाह बगैर किसी की शिर्कत के सिर्फ अपनी कुदरत से कर रहे हैं, ये सारी कायनात अल्लाह की मिल्क है, सारे कमालात के काबिल सिर्फ अल्लाह की जात है क्यों कि वो जब चाहें, जहॉ चाहें, जैसे चाहें और जो चाहें करने पर कादिर हैं।" जब तुम बाजार मे खड़े होकर ये कह रहे होते हो उस वक्त अल्लाह अर्श पर वाह वाह कहता है और फरिश्तों को हुक्म देता है कि मेरे इस बन्दे के लिये दस लाख नेकियॉ लिखो जो दुकान मे है और कह रहा कि दुकान से कुछ नही होता, दुकान है और उसी को लात मार कर कहो कि इससे कुछ नही होता ये कहते हुए अल्लाह के रास्ते मे निकल जाओ, अल्लाह के रास्ते मे निकलना चीजो की तरदीद करने के वास्ते है कि हम अल्लाह के रास्ते मे निकल कर दिल व अमल से चीजो की तरदीद करे सिर्फ जुबान से कहना काफी नही है कि दिल मे तो य है कि कारखाना हाथ आ जाये तो काम बन जाये और जुबान पर है "لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ" इस तरह कहने से ये नूर दिल मे नही आयेगा। दिल से कहो और डन्के की चोट पर कहो कि दुकान से कुछ नही होता और कारखानों से कुछ नही होता, जो इस तरह शक्लों को छोड़कर कलिमा सीखने पर मेहनत करेगा उसको ये नूर हासिल होगा और वही लोग कामयाब होगें। लेंकिन जो इस तरह ना करें ऐसे लोग तबाह और बर्बाद होगें, तुम मुल्क व माल वालों के मोहताज नही हो, जो लोग कलिमा सीख जायेगें ये मुल्क व माल वाले उनका एक बाल भी बांका ना कर सकेगें। जो लोग कलिमे पर एतमाद रखते है अगर पूरे मुल्क मे आग लग जाये इनमे से एक फद भी इस आग से ना मिटेगा और बेकलिमा वालों का इस आग से एक बाल भी ना बचेगा।

ये सारे बड़े बड़े निजाम जो तुम्हारे सामने मौजूद हैं एक लम्हे के लिये भी तुम्हे इसकी जरूरत नही है, खुदा इस सारे निजाम को खत्म कर देगें, इस निजाम को तोड़ देगें। किसी ने एक आदमी से पूछा कि अगर कहीं पर तीर चल रहे हों तो वहॉ पर बगैर तीरों के कैसे बचा जा सकता है ? फरमाया ! जमीन पर लेट जाओ और लेटकर तीरों की तरदीद करो। इसलिये दावत के रास्ते मे तुम किसी शक्ल से मायल ना हो, कोई नक्शा तुम्हे अपनी तरफ ना खीचे, सिर्फ अल्लाह ही से होने पर यकीन लाओ अगर दिल चीजों के यकीन वाला है तो जब चीजे टूटेगीं तो दिल भी टूटेगा कि निकले थे जमात मे और घर से आ गया खत कि बीबी की टॉग टूट गयी है जल्दी से घर वापस आ जाओ। अब ये अमीर साहब के पास रोता हुआ आया कि

अमीर साहब मेरी बीबी को टॉग टूट गयी है मैं घर वापस जा रहा हूॅं, अरे ! घर क्यों वापस जा रहा है, क्या बीबी की टॉग तू जोड़ेगा ? ये बता अल्लाह ने तेरी औरत तेरे भरोसे पर बनायी है या अपने भरोसे पर बनायी है ? तेरी बीबी का रब तू है या रब अल्लाह है ? अरे ! रब की राह मे मेहनत कर और रब ही से मॉग तो वो रब अब तेरे हक मे अपनी ताकत का इस्तेमाल करेगा और जाहिर के खिलाफ तेरी बीबी की टॉग जोड़ देगा, इसलिये इस यकीन को पैदा करने की मेहनत करो। अरे ! अगर तू करने वाला होता तो तेरे घर की ये हालत क्यों होती ? सारी जिन्दगी घर के लिये मेहनत करते करते गुजर गयी कि मैं ऐसा बन जाऊॅ और वैसा बन जाऊॅ पर आजतक तो बना नही। अब भी तेरी समझ मे नही आ रहा है कि करने वाला तू नही कोई और है, तेरे दिमाग मे आखिर कितना कूड़ा भरा है कि करने वाले को अब तक नही पहचाना, उसे पहचानने पर ही तेरे साथ खैर का मामला होगा फिर वो तेरे काम बनाकर दिखलायेगा। देख भाई तेरे मेहनत करने के बावजूद तेरा दुनियॉ का काम इसलिये नही हो रहा है ताकि तू पहचान ले कि करने वाला कोई और है। इसलिये इस रास्ते मे इतना फिरो इतना फिरो कि करने वाले को पहचान जाआ कि करने वाला सिर्फ अल्लाह है फिर वो अल्लाह तुम्हारे अन्दर ये नूर डालेगा जिस नूर मे तुम्हे वो नजर आयेगा जो आज चॉद सूरज की रौशनी मे नजर नही आ रहा है फिर ये नूर इतना बढ़ जायेगा जहॉ तक तुम नही जा सकते, ये नूर पार्लियामेन्ट मे घुसकर दिलों मे उतरेगा, ये नूर उन अडडों मे घुस जायेगा जो संगीनों के पहरो मे बन्द हों अगर कोई हवाई जहाज तुम्हारे ऊपर से गुजर जायेगा तो ये नूर उसमे भी घुस जायेगा। तुम्हारे इस नूर से जितनों को पलटना होगा वो पलट जायेगें और जिनको को पलटना ना होगा तो ऐसे लोग सैलाब या ऐटम से या बीमारियों को फैलाकर खत्म कर दिये जायेगें। अल्लाह कुदरत वाले हैं वो चाहे जैसे करें, ये करना खुदा का काम है, तुम्हे हथियार नही उठाने पड़ेगें बस तुम्हारी दुआ होगी और उन्ही के हथियार आपस मे चलेगें। इस नूर को बढ़ाने के लिये अन्धेरे को दूर करने की दुआ करो, हमे तुम्हे सिर्फ इतना ही करना है बाकी सब अल्लाह करेगें, हमे तुम्हे हथियार नही उठाने पड़ेगें अगर डन्डा मारना ही हो तो मूसा अलै0 की तरह, अब बोलो इसके लिये कौन कौन तैयार है ?

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0

हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0

बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद

14 फरवरी सन 1960

अल्लाह के अहकामात को पूरा करने मे कामयाबी है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! अल्लाह रब्बुल इज्जत के खजानों मे ला महदूद कामयाबियाँ है, इन कामयाबियों को हासिल करने के लिये इन्सान को पाकी हासिल करनी पड़ती है और पाकी हासिल होती है अल्लाह रब्बुल इज्जत के अहकाम को पूरा करने से। इन्सान चूँकि नापाक है और इसकी नापाकी की वजह अपनी जरूरतों को अपनी मर्जी से पूरा करना है कि जब हम बीबी के साथ सोहबत की जरूरत पूरी करते हैं तो हम सर से लेकर पैर तक नापाक हो जाते हैं या जब हम पेशाब पाखाना करते हैं तो नापाक हो जाते हैं, इसलिये इन्सान का अपनी जरूरतों को अपनी मर्जी से पूरा करना नापाक करता है और पाकी पैदा होती है अपनी जरूरतों को अल्लाह की मर्जी पर पूरा करने से कि बीबी के साथ सोहबत की जरूरत पूरी करके हम सर से लेकर पैर तक नापाक हो जाते हैं पर वुजू और गुस्ल करके हम फिर पाक हो जाते हैं। क्यों ? क्यों कि वुजू और गुस्ल अल्लाह का हुक्म है इसलिये हुक्म को पूरा करने से पाकी वापस आ जाती है, आदमी पानी से पाक नही होता बल्कि अल्लाह का हुक्म पूरा करने से पाक होता है अगर अल्लाह ने पाकी का कोई और तरीका बताया होता तो सालों तक समन्दर मे नहाने के बावजूद आदमी नापाक रहता। अब अगर आदमी को पानी हासिल करन की कुदरत नही है तो तयम्मुम से पाकी हासिल की जा सकती है क्यों कि तयम्मुम भी अल्लाह का हुक्म है। इसलिये अल्लाह रब्बुल इज्जत के खजानों से लेने के लिये पाकी हासिल किये बगैर कोई काम नही हो सकता कि पहले पाकी हासिल करो फिर नमाज पढ़ो, नमाज शुरू से आखिर तक अहकाम की तकमील का नाम है। पहले वुजू का हुक्म फिर कयाम का, तिलावत का, रूकुउ, सज्दा और फिर कायदा का हुक्म तो शुरू से आखिर तक नमाज हुक्म के पूरा करने का एक नक्शा है, खुदा पाक है तो पाक से लेने के लिये अपने आपको पाक करने की जरूरत है।

खुदा के खजानों से चीजा के रास्ते से कुछ नही मिलता बल्कि खुदा से लेने के लिये पाक करने वाले आमाल के रास्ते से मिलता है, खुदा से नमाज के रास्ते से लेने के लिये सिर्फ वुजू और गुस्ल से पाकी काफी नही है बल्कि इन्सान को सबसे पहले शिर्क से पाक होना पड़ेगा और शिर्क से पाकी तवक्कुल (तवक्कुल खुदा की जात और उसकी बात पर भरोसा करने को कहते) से हासिल होगी फिर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत इसे पूरी तरह पाक कर देगी।

शहवत किसे कहते हैं ?

चीजों से जरूरत पूरी करने का नाम शहवत है।

चीजे क्या है ?

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ

इस आयत मे जो बतलाया गया है ये सारी चीजें इन्सान की जरूरतें है, खुदा इन आयात मे फरमा रहे है अगर ये शहवत तुम्हे अल्लाह और रसूल से ज्यादा महबूब हैं

فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ

इन्तेजार करो तुम्हारा फैसला होगा

इन्सान की मुहब्बत इन चीजो से दूर हो जाये और अल्लाह की मुहब्बत गालिब हो जाये तो ये इन्सान पाक है, यूँ फरमाया ! इन्सान आखिरत मे उसी के साथ होगा जिससे उसको मुहब्बत होगी। इन्सान के अन्दर से जूँ जूँ ख्वाहिशात और चीजों को मुहब्बत निकलती जाती है ईमान की तकमील होती जाती है, जब मुहब्बत के मकाम तक पहुँच जाओगे तो ख्वाहिशात और चीजों की मुहब्बत निकल कर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत आ जायेगी अगर मरने से एक लम्हा पहले भी ऐसा हो गया तो ईमान आ गया। मुहब्बत दिल की चीज है, लोग कहते हैं मुहब्बत वहमी चीज है तो इसे कैसे हासिल किया जाये ? नही ऐसा

नही है बल्कि मुहब्बत पैदा करने से पैदा होती है (मुहब्बत क्या चीज है ? जिस चीज से जरूरत पूरी होती है उस चीज की मोहताजगी को मुहब्बत कहते है, मुहब्बत और मोहताजगी एक ही चीज के दो अलग अलग नाम है जैसे सोहबत की जरूरत औरत से पूरी होती है, भूख की जरूरत खाने से पूरी होती है, कपड़े की जरूरत माल से पूरी होती है, इसलिये इन्सान को औरत, खाने और माल से मुहब्बत होती है पर हकीकत म ये सारी चीजें अल्लाह के देने से मिलती हैं लिहाजा इनमे से जब किसी चीज की जरूरत पड़े तो मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल करके ये चीजें अल्लाह से मांगी जाये। अल्लाह तआला फरमाते हैं ! मेरे बन्दों तुम सब भूखे हो सिवाय उसके कि जिसको मैं खिलाऊँ लिहाजा तुम मुझसे खाना माँगो मै तुम्हे खिलाऊँगा। मेरे बन्दों तुम सब नंगे हो सिवाय उसके कि जिसको मैं पहनाऊँ लिहाजा तुम मुझसे कपड़े माँगो मै तुम्हे पहनाऊँगा। चूँकि हमे अल्लाह से मिलता हुआ और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल से होता हुआ नजर नही आ रहा है, इसलिये हमे ना अल्लाह से मुहब्बत है और ना रसूल से मुहब्बत है बल्कि बाप, बेटे, भाई, औरतें, खानदान, माल, तिजारत और मकान से इसीलिये मुहब्बत है क्योंकि इन्ही चीजों से इसको अपनी जरूरतें पूरी होती हुई नजर आ रही हैं इसीलिये अल्लाह तआला ने फरमाया !

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ

इनकी मोहताजगी से निकलो) मुहब्बत पैदा होने का सबब ख्वाहिशात को कुरबान करके हुक्म को पूरा करना है, रोजे के अहकामात इसीलिये हैं कि खाने पीने का शौक निकल कर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत आये। नमाज, हज और जकात ये सारे अहकामात इसीलिये हैं ताकि माल, घर, खानदान, वतन और मुल्क की मुहब्बत आदमी के अन्दर से निकल जाये, तुम ये मेहनत इतनी करो कि इन सब चीजो की मुहब्बत अन्दर से निकल जाये। आदमी जब अल्लाह के रास्ते मे निकल गया तो ख्वाहिशात के नक्शे से बाहर आ गया मगर ख्वाहिशात वाला दिल अभी साथ है, अब शैतान कोशिश यह करेगा कि ये ख्वाहिश पर इस्तेमाल हो इसके लिये वो अच्छे अच्छे खाने के पकाने की राय देगा, मस्जिद मे एक जगह मुकर्रर कर लेगा कि मैं यहाँ सोऊँगा, यहाँ नमाज पढ़ूँगा, ऐसा करने से कई नुकसान है मस्जिद मे जगह मुकर्रर करने पर उस जगह को अपना हक समझने लगेगा अगर वहाँ कोई दूसरा बैठ जाये तो उसे हटाने लगेगा कि मैं यहाँ बैठता हूँ या मैं यहाँ लेटता हूँ इससे लड़ाई भी शुरू हो सकती है।

सारी मस्जिद सारे नमाजियों के लिये है जो यहाँ पहले आकर बैठ जाये वो वहीं पर नमाज पढ़ेगा, इसलिये शैतान पहले ये कोशिश करता है कि ख्वाहिश के नक्शे से उसे ना निकलने दे लेकिन जब हिम्मत करके ये निकल जाता है तो ये जहाँ जाये शैतान उसके सामने अब छोटी छोटी ख्वाहिशें रखता है। एक बात आर समझ लो कि

इन्सान ख्वाहिश पर चलने से क्यों नापाक हो जाता है ?

ख्वाहिश पर चलने से इन्सान इसलिये नापाक हो जाता है क्यों कि इन्सान का जिस्म मनी के नापाक कतरे से बना है और दो दफा पेशाब के रास्ते से निकला है तो अब जब भी ये जिस्म की ख्वाहिश को पूरा करेगा बस नापाक हो जायेगा। इन्सान खुशबूदार से खुशबूदार भी खाना खा ले वो खाना बदबूदार बनकर निकलेगा और उसको नापाक कर देगा चूँकि हमारा जहन हकीकत की तरफ जाता नही है इसलिये हमारे सामने सिर्फ शक्ल और सूरत है कि एक अमीर आदमी को एक औरत से मुहब्बत हो गयी वो औरत बहुत पाकबाज और खूबसूरत थी, उसने औरत पर दबाव डाल कि शाम को तेरे पास अपनी ख्वाहिश पूरी करने आऊँगा। ये सुन कर उस औरत ने उसी वक्त खूब जुल्लाब लिया जिसकी वजह से सुबह से शाम तक दस्त आते रहे और वो उसे मटके मे जमा करती रही, शाम तक उसके रूखसारों पर झुर्रियाँ पड़ गयीं, चेहरे की सारी खूबसूरती खत्म हो गयी, चेहरा ऐसा हो गया जैसे मरने वाली हो। जब शाम को उसका आशिक आया तो उसके चेहरे की बदसूरती देखकर कि मरने वालों जैसा हाल है, वो बिदक कर वापस जाने लगा क्यो कि उसकी मुहब्बत की हकीकत अब उस पर जाहिर हो गयी थी, औरत ने उसको रोकना चाहा पर वो ना रूका तो औरत ने कहा ! ये मटका लेते जाओ। उसने पूछा ! मटके मे क्या है ? औरत ने कहा ! इसमे वही है जिस पर तुम कल तक मर रहे थे।

इसलिये इन्सान तो बिल्कुल गन्दा है इसके अन्दरे से निकलने वाले तकाजे इन्सान की नापाकी का सबब बन जाते है पर खुदा के हुक्म की तामील इसको पाक बना देती है जैसे हुक्म है कि नमाज से पहले अगर पेशाब पाखाना जोर से लगा हो तो पहले पेशाब पाखाना कर लो लिहाजा अब इसका पेशाब पाखाने को जाना हुक्म की तामील पर हो रहा है जिसकी वजह स इसके अन्दर पाकी पैदा हो रही है। इसलिये पेशाब पाखाना, सोना जागना और कमाना खाना अपनी मर्जी पर मत करो बल्कि अल्लाह की मर्जी पर करो तो ये तुम्हे पाक करने वाला बन जायेगा लेकिन इसके लिये तुम्हे इल्म हासिल करना पड़ेगा। इल्म

हासिल करना या पूछ पूछकर चलना कि अल्लाह की मर्जी पर अपनी जिन्दगी को अल्लाह के ध्यान के साथ इस तरह चलाना कि अल्लाह का गैर सामने ना हो।

अल्लाह का गैर कौन है ?

सबसे बड़ा अल्लाह का गैर खुद अपना वजूद है, वही तो हर चीज से हुक्म पर जुड़ता है।

अल्लाह की मंशा व मर्जी पर चलने मे सबसे बड़ा मुकाबला अपने वजूद का है इसलिये सबसे पहले निस्बत बदलो कि जिस्म की जरूरतें अपनी मर्जी पर पूरा ना करो बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर पूरी करो,

, لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ निस्बत बदलने का नाम है, पेशाब पाखाने के छत्तीस आदाब है, ये आदाब क्यों हैं ? ये आदाब इसलिये हैं ताकि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हमे अपनी जिन्दगी को चलाना आ जाये, जिस तरह अल्लाह ने अपनी मर्जी से हमारे सर से लेकर पैर तक की शक्ल मनी के गन्दे कतरे से बनायी और पेशाब पाखाने के गन्दे अमल को आदाब बतलाकर अच्छा बना दिया। पाकी के लिये हमने जो मिटटी या पानी इस्तेमाल किया, ये मिटटी या पानी हमारी पाकी का जरिया ना बना बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हमारा इस्तेमाल होना पाकी का जरिया बना इसलिये हम अपनी हर हाजत और जरूरत पूरी करने के वक्त यह मालूम करें कि अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हम किस तरह इस्तेमाल हों।

नमाज का क्या मकसद है ? नमाज का मकसद ये है कि जिस्म का इस्तेमाल अल्लाह और उसके रसूल की मंशा व मर्जी पर हो कि माल कमाना है तो पहले कमाई का सही तरीका पता करो, सही तरीके से कमाया हुआ माल पाक है अब इस पाक माल को खर्च करने से पहले और पाक करो, कैसे ? जकात अदा करके के। जकात अदा कर देने से माल बिल्कुल पाक हो जाता है पर ये याद रखना कि जकात निकालने से माल पाक नही होता बल्कि अदा करने से पाक होता है।

जकात अदा कैसे होगी ?

जकात अदा होगी मुस्तहेक के पास जाकर देने से कि तुम्हारे जानने वाले मे किसी के पास खाने को नही है, किसी के पास कपड़े नही हैं उन तक जाकर उनकी जरूरतों के पूरा करने से जकात अदा होगी। खुदा ने नापाक करने वाले ख्वाहिशात के दायरे मे अहकामात देकर इसे पाक कर दिया, इसलिये ख्वाहिश के गुलाम बनकर ना चलो बल्कि अल्लाह की मर्जी और मंशा पर अपनी जरूरतें को पूरी करो, इससे हमारी जरूरतें भो पूरी होंगीं और हुक्म भी नही टूटेगा।

घर की ख्वाहिश कैसे निकलेगी ?

इसके लिये अल्लाह के रास्ते मे निकलो और घर के अहकाम सीखकर आओ, निकलोगे तभी ये जहन बनेगा।

अपनी जरूरतों को अपनी मर्जी पर पूरा करने के क्या नुकसान है और अल्लाह की मर्जी पर अपनी जरूरतें को पूरी करने मे क्या फायदे है ? फिर ये भी समझ लो कि अल्लाह की मर्जी पर अपनी जरूरतें को पूरी करने से अल्लाह ने जरूरतों को पाक तो कर दिया लेकिन उसको बड़ी चीज करार नही दिया। जिन्दा रहन को बड़ी चीज करार नही दिया बल्कि शहीद होने को बड़ी चीज करार दिया कि खून का पहला कतरा गिरते ही सारे गुनाह माफ हो गये तो बाकी कतरों मे कितना मिलेगा, जन्नत के कितने दरजात बढ़ेंगें। इसी तरह रोजे का महीना आया तो रोजा बड़ा हुक्म है और खाना छोटा हुक्म है अगर खाने को रोजे के साथ जोड़ सको तो जोड़ लो और अगर ना जोड़ सको तो खाना छूटेगा रोजा नही। ये तो अल्लाह का करम है कि हमे अपनी जरूरतें को पूरा करने मे भी अल्लाह ने अपनी मंशा और मर्जी बतलाकर इन्हे पाक कर दिया मगर ये छोटी चीज है और छोटो रहेगी। बहुत से ऐसे अहकामात है जिनमे पाक ख्वाहिश को भी छोड़ना पड़ेगा कि इबादत के सारे अहकामात और खुदा की राह मे जान व माल के खर्च करने के अहकामात, ये अहकामात बहुत बड़े है जब इनका वक्त आ जाये तो पाक ख्वाहिश को भी छोड़ना पड़ेगा, देखना ये पड़ेगा कि किस वक्त कौन तकाजा ज्यादा जरूरी है।

सहाबा किराम हुजूर सल्ल0 के पास माल लेकर आते तो आप बआज का माल तो कुबूल फरमा लेते और बआज का माल उनके मुँह पर मार देते कि इतना दोगे तो कल को माँगते फिरोगे, इसलिये हर एक को सारा माल खर्च कर देना सही नही है। हा अगर सारा माल खर्च करके दिल को मजा मिलता हो तो सारा खर्च करो और अगर सारा माल खर्च करके रोते फिरने का खतरा है तो उतना ही खर्च करो जितना जरूरी है। अगर अबु बक्र सिददीक रजि0 वाली हालत आ गयी तो सारा माल खर्च कर दो वरना फिर बाद मे दूसरों से सवाल करके अल्लाह की नाशुक्री करोगे। हकीकत के ऐतबार से मिक्दार तो पूरी जान और पूरा माल है मगर उसके ये मयाने भी नही कि इस मकसद के लिये हम लाखों के कमाने मे लग जाऐ, अभी जितना है

उतना लगाओ जब अल्लाह लाखों देगें तो लाखो लगाओ। बीबी बच्चों की खबरगीरी भो जरूरी है लेकिन जरूरत पूरी करने के ऐतबार से ना कि उनकी ख्वाहिश पूरी करने मे, आज एक लाख कमाते हो और कहते हो कि अल्लाह के लिये कैसे खर्च करूँ ? क्यों कि मेरा खर्चा सवा लाख का है। अरे किसने तुम्हे इजाजत दी है कि बीबी बच्चों पर सवा लाख खर्च करो ? अल्लाह के हुक्म का ये मतलब नही कि जितना जी चाहे कमाओ, जैसा चाहे मकान बनाओ और जितना चाहे बीबी बच्चों पर खर्च करो फिर जो बचे उसे अल्लाह के रास्ते मे खर्च करो अरे ! जब बचेगा ही नही तो खर्च क्या करोगे कि अपनी आखिरत पर खर्च करने की नौबत ही नही आयेगी तो वो बड़े बड़े अहकामात जिनसे तुममे बड़ी पाकी आयेगी जिस पाकी की वजह से कौमों मे और मुल्को मे पाकी आयेगी, जिससे इज्तेमाई पाकी के दरवाजे खुलेगें, तुम्हारे अन्दर से नापाकियॉ तब निकलेगीं जब इन अहकामात को नम्बर एक पर लाओगे।

जब तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह दूसरों के लिये इताआत के दरवाजे खोलेगें, ऐसी मेहनत को लाने के लिये पहले तुम्हे बहुत से अहकामात खुद पूरे करने पड़ेगें। इताआत के अहकामात, एख्लास के अहकामात और जिक्र के अहकामात इनमे से कोई भी हुक्म छोटा नही है, जब तुम इन्फिरादी और इज्तेमाई मेहनत को हर हाल मे करोगे तो तुम्हारी दुआओं से बहुतों को हिदायत मिलेगी। उम्मत को तुम नही पलट सकते उम्मत को खुदा ही पलटेगें मगर दुआओं से लेकिन तुम्हारी दुआ कुबूल होगी पूरी मेहनत के बाद लिहाजा अब हर चीज पहले खुद सीखने की बन गयी इसलिये पूरी दुनियॉ को अपनी मेहनत का मैदान बना लो सारी मेहनत के साथ जब दावत दोगे तो सबको हिदायत मिलेगी। सिर्फ नजर आने वालों पर मेहनत करोगे तो सारी हिदायत देर मे मिलेगी और सारी दुनियॉ को जब मेहनत का मैदान बनाकर सारी मेहनत करोगे तो गैर मुस्लिम भी ईमान से नवाजा जायेगा, उनको मुसलमान तुम नही बनाओगे बल्कि तुम्हारी दुआओं पर खुदा उन्हे मुसलमान बनाएगें, सब कुछ तुम्हे नही करना है बस तुम्हे सिर्फ इतना करना है जितना बतलाया जा रहा है, अब बतलाओ कौन कौन तैयार है।

किताब का नाम - अहम बयानात हजरत मौलाना यूसुफ सा0 रह0
हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0
बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद
28 दिसम्बर सन 1959
कामयाबी का तआल्लुक रूह के बनने और बिगड़ने पर है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मेरे अज़ीज़ो और दोस्तों ! हकीकत वो नही है जो इन्सान को नजर आ रहा है बल्कि हकीकत इन्सान से छुपी हुई शै है यानी सूरत ए हाल कुछ और है-हकीकत ए हाल कुछ और है। जाहिरी असबाब मे चॉद, सूरज और सितारे ये सब सूरत ए हाल है और रूह हकीकत ए हाल है चूँकि सूरत ए हाल नजर आ रहा है इसलिये इन्सान अपनी मेहनत का मैदान इन्हो चीजों को बनाये हुए है, हकीकत इसे नजर नही आ रही है इसलिये इन्सान की मेहनत इस पर नही है। अम्बिया अलै0 इस छुपी हुई शै की तरफ ही मुतवज्जाह करने के लिये भेजे जाते थे, अब एक मेहनत जाहिर की बुनियाद पर है यानी सूरत और जिस्म की बुनियाद पर और एक मेहनत हकीकत और रूह की बुनियाद पर है। जिस्म अलग शै (चीज) है और रूह अलग शै (चीज) है, इन दोनों चीजों के मज्मुए को इन्सान कहते है, इन दोनों चीजों के निजाम अलग अलग है। खुदा ने एक निजाम जिस्म का कायम फरमाया और एक निजाम रूह का कायम फरमाया, ये दोनों निजाम अपना अपना काम कर रहे है और ये दोनों निजाम खुदा के चलाने से चल रहे।

अब अगर जिस्म के निजाम को लिया जाये (कायनात की हर सूरत व शक्ल मान्निद जिस्म के है) कि खुदा चॉद, सूरज की गर्दिश कायम करके नबातात (पेड़-पौधे) उगा रहे हैं, गल्ला पैदा फरमा रहे हैं, हवाऐं चला रहे हैं और बारिश भेज रहे हैं। रूहानी निजाम का मतलब ये है कि खुदा चीजों मे तासीर भेज रहे हैं दवाओं मे फायदा और नुकसान, हवाओं मे फायदा और नुकसान, ओहदों मे इज्जत और जिल्लत यानी जिस्मों के खाका मे हालात पैदा फरमा रहे है। ये हालात चीजों मे नही बनते बल्कि इन जिस्मानी खाकों मे खुदा अपनी मर्जी और इरादे के मुताबिक हाताल पैदा कर रहे हैं, खुदा चाहें तो खुशियों के खाकों मे नागवारियॉ पैदा कर दें और मुसीबतों के खाकों मे खुशियॉ पैदा कर दें गर्ज ये हालात रूहानी निजाम के तहत खुदा के खजाने से लाकर इन नजर आने वाली शक्लों और सूरतों मे डाले जाते हैं। खुदा जब तक चाहें कोठियों, महलों और मकानों मे राहत निकाल कर दिखायें और जब चाहें उन्ही मे से फित्ने और तकलीफ पैदा फरमा दें। जिस तरह जिस्म ए इन्सानी मे रूह जिस्म से नही बनती बल्कि खुदा रूह को अपने खजाने से जिस्म मे भेजते हैं इसी तरह खुदा जब चाहते हैं और जैसा चाहते हैं हर शै (चीज) मे हालात भेजते हैं वो चाहे बीमारी हो या सेहत, इज्जत हो या जिल्लत।

खुदा ने हालात का जो जाब्ता मुकर्रर फरमाया है उसका तआल्लुक रूह से है अगर इस रूह को तुमने रौशन कर लिया और पाक व साफ कर लिया, खुश्बूदार बना लिया तो खुदा तुम्हारे लिये हर शै (चीज) मे सुकून के हालात डाल देगें, तुम्हारे पास चाहे 5 पैसे का खाका हो या 5000 रूपये का लेकिन जिस्म के आजा को अगर तुमने अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करके अपनी रूह को बिगाड़ लिया तो हर शै (चीज) मे खराबी के हालात डाल देगें। खुदा का जाब्ता सबके लिये आम है, सबसे बड़े मालदार और सबसे बड़े गरीब के लिये, सबसे बड़े ओहदेदारों से लेकर सबसे कमतर आदमी तक जाब्ता सबके लिये एक है अगर कोई ये चाहे कि अपने नामुनासिब हालात को शक्लों मे तगययुर व तबददुल करके दुरूस्त कर ले तो ये मुम्किन नही है। खुदा के यहॉ जिस्मानी एतबार से किसी को इम्तियाज नही है लगंड़ा, लूला, अन्धा और ऑख वाला, गूंगा और बोलने वाला, कपड़ों वाला और बिना कपड़ो वाला, कोठी वाला और झोपड़ी वाला ये जितनी शक्लें और सूरतें हैं खुदा के नजदीक ये सब एक किस्म है लिहाजा इनमे जो तफरीक पैदा होगी वो रूहों के कामयाबियों और नाकामियों पर पैदा की जायेगी।

अब गौर करो कि रूह कैसे बनती और बिगड़ती है ?

रूह कैसे बनती ओर बिगड़ती है कुरआन व हदीस का मौज़ूअ यही है, जिस्म (सूरत) का रास्ता बहुत लम्बा-चौड़ा है और रूह का रास्ता बहुत छोटा है, जिस्म के रास्ते मे चॉद सूरज मे गर्दिश पैदा की गई, हवाऐं चलाई गयी, बादल उठाये गये, बारिश बरसाई गयी इसमे कितने दिन लगे ? फिर दाने पैदा किये, इन्हे पिसाया गया, रोटी पकायी गयी फिर कहीं जाकर खायी गयी इसमे कितने दिन लगे ? फिर उस खाने से मनी पैदा की गयी और उस मनी से जिस्म ए इन्सानी बनने की इब्तेदा की गयी उसमे कितने दिन लगे ? लेकिन रूह डालने मे कितने दिन लगे कि एक दिन भी नही। फरिश्ता कब मॉ के पेट मे रूह डाल गया इसकी किसी को खबर नही, ना मॉ को खबर ना बाप को खबर, ना हकीम को खबर ना डाक्टर को खबर कि जिस्म मे रूह पड़ गयी फिर तीन उंगलियों के बराबर का ये जिस्म तीन हाथ तक पहुॅचा और उसमे भी कम से कम 20 साल लगे अब खुदा इस जिस्म से जब चाहे रूह निकाल ले अगर सारे मिल कर भी इसे रोकना चाहे तो रूह निकलने से कोई नही रोक पायेगा गर्ज खुदा ने हकीकतों को इन्सान मे छिपा दिया है। रूह मे नूर और खुशबू जिस्म के आजा से नही आती चाहे बरसों इतर के हौज मे पड़े रहे पर रूह मे खुशबू नही आयेगी, सारा सजनां और सवंरना जो तुम कर रहे हो इसका तआल्लुक जिस्म से है रूह से नही, रूह का सजानां और सवांरना इसकी खुशबू और नूरानियत का तआल्लुक खुदा की मर्जी व मंशा वाले अमल से है। रूह मे नूर व जुल्मत अमल की वजह से आती है और असल चीज यही है।

अगर रूह जिस्म से निकल जाये तो दुनियॉ भर की दौलत, दुनियॉ भर की चीजे और सारा कायनाती निजाम सर से लेकर पैर तक जोड़ दो वो मुर्दा जिस्म कुछ ना कर सकेगा, उससे कोई अमल ना होगा। जुबान बोल ना सकेगी, आखॅ देख ना सकेगी, कान सुन ना सकेगें, हाथ व पैर हरकत ना कर सकेगें इसलिये कि जिस्म मे अमल रूह से पैदा होता है और अगर किसी से सारी दौलत छीन ली जाये, उसके हाथ पैर कटे हों, कमजोर हो लेकिन रूह जिस्म मे मौजूद है तो उसके जिस्म से अमल होते रहेगें। सांस लेता रहेगा, दिमाग सोचता रहेगा और जुबान बोलती रहेगी, इन्सान के जिस्म मे रूह है तो जिस्म से अमल जरूर होंगें क्यो कि अमल रूह की जिन्स हैं, अमल चीजों की जिन्स नही है। इन्सान अगर खुदा की मर्जी व मंशा वाले अमल कर रहा है तो इसके जिस्म के अन्दर रूह मे खुशबू व नूरानियत पैदा हो रही है और इन्सान अगर अपनी ख्वाहिशात वाले अमल कर रहा है तो इसकी रूह मे बदबू और जुलमत पैदा हो रही है क्यों कि रूह पर अमलों का असर पड़ता है। ये अमल जुबान का हो या ऑख का, हाथ का हो या पैर का, अमल छोटा हो या बढ़ा हर हर अमल का असर रूह पर पड़ता है, जिस तरह जिस्म मे जब जिस्म (मॉ के रहम म) बनता है तो अन्दर वाला जिस्म दिन पर दिन बढ़ता चला जाता है इसी तरह जिस्म के अन्दर की रूह मे खुदा की मर्जी व मंशा वाले अमल करने से दिन पर दिन खुशबू, ताकत व नूरानियत बढ़ती चली जाती है। अगर आप अपने अमलों को सुधार लें तो खुदा की कसम ! जो कीमत आपके छोटे से छोटे अमल की है उसके मुकाबले में सारी दुनियॉ की कीमत भी एक जर्रे की हैसियत नही रखती। आपकी एक निगाह चॉद सूरज से ज्यादा कीमती है और अगर आमाल की खराबी से आपकी रूह बिगड़ कर स्याह हो गयी है तो मकानों मे तकलीफें आयेगीं, ओहदों मे जिल्लत आयेगी अगर रूह का खाका सुधार लें तो रूह मे तेजी आती है, इतनी तेजी जो कायनात की किसी चीज मे नही फिर ये रूह सूरज और चॉद से भी ऊपर जाती है, बिजली की कून्ध और निगाह के झपकने से भी ज्यादा तेज चलती है।

रूह मे स्याही और बदबू शिर्क से पैदा होती है और खुशबू, ताकत व नूरानियत ईमान से पैदा होती है, एक जिस्म खत्म होने के लिये मिला है और एक जिस्म बाकी रहने के लिये मिलेगा। आज जो जिस्म है ये खत्म होने के लिये है कि ये ताकते खत्म हो जायेगीं, ये आजा (ऑख, कान, जुबान, हाथ व पैर वगैरह) गल जायेगें, ये जिस्म तो रेजा रेजा होने के लिये बना है तुम इसको चाहे जितना सवांरने की कोशिश करो ये खत्म हो जायेगा लेकिन रूह को अगर सवांर लिया तो जो एक जिस्म बाकी रहने के लिये मिलेगा वो पाक, साफ और खूबसूरत होगा, उस जिस्म मे कभी कमजोरी नही आयेगी। इस जिस्म से जब रूह निकलेगी तो ऑख खोल दी जायेगी कि रूह किस तरह जा रही है देख ले, जब रूह निकलती है तो ऑख इस तरह खुलती है कि फिर बन्द नही होती जब तुम बन्द करते हो तब बन्द होती है। अब अगर इन्फिरादी तौर पर तुमने रूह को पाक कर

लिया है तो खुदा अफराद को तुम्हारे सामने झुका देगें और अगर इज्तेमाइ तौर पर तुमने रूह को पाक किया है तो खुदा मुल्कों को तुम्हारे सामने झुका देगें। खुदा की कसम ! अगर तुमने अपनी रूह मे उरूज पैदा कर लिया तो जाहिल लोग जो रूह के बारे मे कुछ नही जानते वो मुल्क के एतबार से या माल के एतबार से चाहे जितने बड़े हों तुम्हारे पॉव पकड़ेगें। जो इन्सान अपनी रूह से अनजान रह कर उसको स्याह और बदबुदार बनने दे तो खुदा ऐसे इन्सानो को हुकूमत की कुर्सियों पर जलील करके दिखायेगें, सरमायेदारी की गदिदयों पर बिठाकर जूते खिलवायेगें गर्ज कामयाबी का तआल्लुक रूह के बनने और बिगड़ने पर है और रूह का बनना और बिगड़ना अमल पर मौकूफ है। जब फरिश्ते खुशबूदार व नूरानी रूह को जिस्म से निकालते है तो कहते हैं

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً

सूरह फज्र 27 .28

जब मलकुल मौत आदमी की रूह निकाल कर आसमानों पर ले जाते हैं तो स्याह रूह के साथ बदशक्ल फरिश्ते होते हैं जो बदबू लेकर आते हैं और खुशबूदार व नूरानी रूह के लिये खुशबू लेकर आते हैं। नूरानी रूह वालो का आसमानों पर इन्तेजार होता है, क्यों इन्तेजार होता है ? इनका इन्तेजार इसलिये होता है कि सुबह व शाम इनके जो आमाल आसमानो पर जाते थे आज उस नूरानी अमल वाले की रूह आसमानो पर आ रही है, उसके इस्तगबाल के लिये आसमानों पर इन्तेजार होता है। नूरानी अमल करने वालों को दुनियॉ के लोग चाहे ना जानते हों पर आसमान वाले उनसे अच्छी तरह वाकिफ है, बस दुनियॉ मे तुम पोशीदा रहकर आसमानों पर मशहूर होने वाले बन जाओ तो फरिश्ते कहेगें इस मर्दे मोमिन की रूह कितनी खुशबूदार है। ये फरिश्ते जब इसकी रूह को लेकर अर्श पर पहुँचेगें तो खुदा फरमायेगें कि मेरे बन्दे को ले जाकर आराम से सुला दो फिर खानापूरी के लिये रूह को बदन मे डालकर सवाल जवाब किये जाते है। इन जवाबात के लिये तैयारी की जरूरत है, खुदा की इस दुनियॉ मे चाहे कोई बड़ा लेक्चरर बन जाये, प्रोफेसर बन जाये, इन्जीनियर बन जाये, फलसफी बन जाये, मुकर्रिर बन जाये, जब तक उनकी तैयारी ना कर ले उन सवालों के जवाबात नही दे सकेगा। उसकी तैयारी जरूरी है खुदा पर इतना तवक्कुल हर आदमी पर फर्ज है कि वो हराम से बच जाये, इसके लिये अपनी पूरी जिन्दगी को चार चीजों पर लगाना है,

1 खुदा का यकीन,

2 तरीका ए अमल मुहम्मद सल्ल0 का,

3 खुदा का ध्यान,

4 खुदा की रजा, इन चारों चीजों को अपने अन्दर पैदा करने के लिये बस 4 माह लगा दो।

किताब का नाम - हजरत जी की यादगार तकरीरें
हजरत मौलाना युसुफ साहब रह0 का आखिरी बयान

पहली अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब

बमकाम मस्जिद बिलाल पार्क, लाहौर

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ
نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ
نُزُلاً مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ

अल्लाह तआला ने जो कुछ जमीन व आसमान में बनाया है उसमें सब वक्ती है, यहॉ वक्ती पेट भरना, वक्ती प्यास बुझाना, वक्ती इज्जत, वक्ती जिल्लत, वक्ती मौत, वक्ती हयात, थोड़ी सी देर के लिए तन्दुरूस्ती है फिर बीमारी है, थोड़ी देर लज्जत, फिर तकलीफ आती है वक्ती परवरिश, और वक्ती जरूरतों का पूरा होना दुनिया की चीजों में रखा है और इंसान के अन्दर जो कुछ रखा है वह वक्ती भी है और अब्दी भी है वक्ती इज्जत और अब्दी इज्जत, ऐसे ही रात व सुकून और चैन व सेहत वक्ती व अब्दी। अल्लाह तआला ने इंसान के अन्दर जो दौलते रखी है वे एक तरफ दुनिया में कामयाब बनाने वाली है और दूसरी तरफ मरने के बाद अब्दी कामयाबी दिलाने वाली है। इसलिए एक इंसान की दौलत की कीमत सातों जमीन व आसमान नही बन सकते, इंसान के अन्दर की दौलत अगर बिगड़ जाये तो सातों आसमान और जमीन से न बन सके और अगर इंसान की दौलत बन जाये और उसके अन्दर की माया उभरे तो सातों आसमान व जमीन की कामयाबी से ज्यादा कामयाबी मिलती है।

दौलत तो बहुत बड़ी चीज है इस दौलत का पहला हर्फ और पहली ईंट ''अल्लाह'' कहना है, आदमी खाली ''अल्लाह'' कहे यह अल्लाह कहना भी बहुत बड़ी दौलत है क्योंकि लफज अल्लाह कहने वाला जब तक एक भी दुनिया में बाकी रहेगा तो जमीन व आसमान इसी तरह खड़े रहेगें अगर एक भी अल्लाह कहने वाला न रहा तो अल्लाह तआला सारे जमीन व आसमान को तोड़-फोड़ देगें अगर आदमी के अन्दर में कोई और दौलत न हो सिर्फ एक दौलत जाहिर हो रही हो कि जुबान से अल्लाह कह रहा है तो यह दौलत इतनी बड़ी है कि सातों जमीन व सातों आसमान उस पर खड़े हैं, नमाज, रोजा और हज व जकात कुछ भी न रहे, सिर्फ अल्लाह को माने और कहे अल्लाह बस इतनी सी दौलत इतनी बड़ी है कि इससे सातों आसमान व जमीन खड़े हैं अगर इतनी भी न रहे तो पांच अरब इंसान भी दुनिया में हो तो वे भी मरेंगें। दरिया, खुश्की और हवा के सारे जानवर जमादात, नबातात, सब खत्म होगें अगर इसान के पास वह अल्लाह वाली दौलत न रहे तो सब खत्म कर दिए जायेगें। एक अल्लाह कहना इतनी बड़ी दौलत है कि आसमान व जमीन उसी पर कायम है। कुरआन मजीद में है-

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ

الَّتِ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ي كُنتُمْ تُو نُزُلاً مِّنْ غَفُورٍ
رَّحِيمٍ عَدُونَ

सूरः हामीम सज्दा रूकू 4

तर्जुमा- जिन लोगों ने (दिलसे) इकरार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर (उसपर) कायम रहे, उस पर फरिश्ते उतरेगें कि तुम न अंदेशा करो न रंज करो और तुम जन्नत के मिलने पर खुश रहा, जिसका तुमसे पैगम्बरों के वास्ते से वायदा किया जाया करता था।

" अल्लाह रब हैं " यह लफज नही एक मेहनत है

अल्लाह रब हैं यह लफज नही एक मेहनत है अगर कोई आदमी ये कहे कि मै दुकान से पलता हूॅ या खेती, मुलाजमत, सियासत या हुकुमत से पलता हूं तो यह कहना लफज नही है बल्कि एक मेहनत है। इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती है कि आदमी जमीन खरीदता है, हल चलाता है, गल्ला लाकर बेचता है, जानवर और मकान खरीदता है, निकाह करता है, गरज इस लफज के पीछे लम्बी चौड़ी मेहनत की जिंदगी है।

ऐसे ही जिसने ये कहा कि हमारे रब अल्लाह हैं तो बात खत्म न हुई बल्कि बात यहां से शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं तो सबसे पहले गैरों से पलन का यकीन दिल से निकालो यह पहली मेहनत है कि मैं जमीन व आसमान और उसके अन्दर की चीजों से नही पलता बल्कि अल्लाह से पलता हूं इसको मेहनत करके दिल का यकीन बनाओ, इस यकीन को रग व रेशा में उतारने के वास्ते मुहम्मद सल्ल0 की अमली जिन्दगी हैं।

अल्लाह से पलता हूं इस बोल की हकीकत दिल में उतारने के लिए मुल्क व माल तिजारत व खेती की मेहनत नही है बल्कि ईमान को सीखते हुए नमाज पर मेहनत है, जब ईमान को सीखते हुए नमाज पर मेहनत की जायेगी तो मुल्क व माल तिजारत व खेती से पलने का यकीन दिल से निकल कर जुबान पर आ जायेगा और जब इन्सान अल्लाह की रबूबियत के यकीन वाली मेहनत को छोड़ कर मुल्क व माल वाली मेहनत पर लगता है तो अल्लाह की रबूबियत का यकीन दिल से निकल कर जुबान पर आ जाता है।

इबादत से पलने पर मेहनत

नबियों वाली मेहनत और हुजूरे अकरम सल्ल0 वाली मेहनत "अल्लाह रब हैं" इस लफज पर करनी होगी यानि मेहनत करके इस हकीकत तक पहुंचो कि हमें सीधे सीधे अल्लाह से पलना है, खुदा को पालने में खेती और दुकान की जरूरत नही वह अपने हुक्मों से पालता है अगर इस लफज की हकीकत पैदा हो जाए तो अमरीका और रूस तुम्हारी जूतियों में होगा बस शर्त इतनी है कि ये सिर्फ जुबान का बोल न हो बल्कि दिल के अन्दर की हकीकत हो तो इस हकीकत पर दुनियॉ में कामयाबी मिलेगी और कब्र के अजाब से बचोगें हूरें बाग और सोना चादी के मकान हमेशा की जवानी हुस्न व जमाल इसी पर मिलेगा। इसी को दिल में फिट करने के लिए हुजूर सल्ल0 की रिसालत है, कायनात में जो कुछ है वह ताबे महदूद और फानी है और अल्लाह के पास लामहदूद और गैरफानी है। परवरिश उस लामहदूद की तरफ से है इसलिए हुजूर सल्ल0 के तरीका ए अमल पर मेहनत करो अल्लाह तर्बियत करने वाले है, अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोगें तब दिल में उतरेगा "अल्लाह रब हैं" और इबादत नमाज है। नमाज तुम्हारे इस्तेमाल का अपना तरीका है, जमीन या मोटर या जानवरों के इस्तेमाल के तरीके का नाम नमाज नही बल्कि अपनी आंख, कान और जुबान वगैरह को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो जैसे आप सल्ल0 ने इस्तेमाल किया।

सोना चांदी और कायनात से पलने में क्या है ?

जमींदारी यानि जमीन से गल्ला लेने के एतबार से हमारे इस्तेमाल का तरीका,

तिजारत यानि दुकान से फायदा लेने के एतबार से इस्तेमाल का तरीका,

हुकूमत यानि मुल्क से फायदा लेने के एतबार स हमारे इस्तेमाल का तरीका,

नमाज क्या है ? नमाज कायनात से नही बल्कि अल्लाह तआला से दोनो दुनिया में लेने के वास्ते हमारे अपने इस्तेमाल का तरीका नमाज है। हमको सिर्फ अल्लाह पालेगा जब हमारा इस्तेमाल आप सल्ल0 के तरीका ए अमल पर होगा कि आपकी किस तरह गारे सौर में हिफाजत हुई ?

बद्र में फतह कहां से मिली ? ,

खंदक में हमले से कैसे बचे ?

इन सारे सवालों का बस एक ही जवाब मिलेगा कि आप सल्ल0 ने नमाज पढकर खुदा से मांगा तो खुदा ने किया, आपके जितने मसले है अगर कोई पूछे तो यही जवाब मिलेगा कि नमाज से हुआ। अल्लाह की जितनी इबादत आपने की है किसी वली ने भी नही की, हदीस में है कि आप सल्ल0 ने इतनी लम्बी नमाज पढ़ी कि नमाज पढ़ते-पढ़ते सुखी मुश्क की तरह हो गए थे और रानों तक वरम आ गया था। अच्छे बहादुर भी अगर नफलों में आपके पीछे खड़े हुए तो सारे दिन बदन में दर्द होता, 4.4 और 6.6 पारों की एक रकआत, एक बार मे जितना बड़ा कियाम उतना ही बड़ा आपने रूकुउ, कौमा, सज्दा और जल्सा किया, ऐसी चार रकआतें पढ़ी, जो सहाबी आपके पीछे खड़े थे उनका बुरा हाल हुआ, आपने सुबह को फरमाया अगर

मुझे पता होता तो मैं मुख्तसर कर देता। आपने इबादत करके अल्लाह को राजी किया, अल्लाह ने कहा मांगो, आपने कियामत तक उम्मत का पलना मांगा कि कोई दुश्मन उसका नाम व निशान न मिटा सके और उस उम्मत की बख्शिश का और आखिरत की निजात का फैसला करा दिया, अब चाहे कितने ही गुनाह करे आपका माफी चाहना कुबूल हुआ।

जूते का तस्मा भी टूटे तो अल्लाह से मांगों

आप सल्ल0 ने कहा कि आपस में लड़ाई न हो, यह दुआ मांगी। अल्लाह ने फरमाया यह तो होगा र्दुनिया में बदअमली की सजा होगी जो कुछ अल्लाह से मनवाया उसके लिए आपने क्या रास्ता अख्तियार किया ? खुदा जाने कितनी लम्बी मुददत है पर कियामत तक का बका तैय करा दिया और आखिरत की मग्फिरत करा दी, यह किस बात पर हुआ ? ऐसी नमाज पढ़ी कि अल्लाह को तरस आया। जब आप नमाज पढ़कर इस उम्मत के लिए रोते थे तो जमीन तर हो जाती थी, हजरत जिब्रील अलै0 को अल्लाह ने भेजा कि जाकर पूछो इतना क्यों रो रहे है ? फरमाया कि उम्मत के लिए रो रहा हूं। जवाब दिया कि रोओ मत हम इस उम्मत के बारे में आपकों खुश कर देगें। यह इबादत और नमाज पर किया एक दिन इतना लम्बा सज्दा किया कि सहाबा किराम रजि0 को गुमान हुआ कि आपका इंतिकाल हो गया आपने फरमाया कि काम हो गया, इस उम्मत की मग्फिरत की बशारत मिल चुकी यह उसक शुक्रिये में इतना लम्बा सज्दा किया था।

एक बार तीन दिन का फाका था लेकिन किसी आशिके जार से भी न कहा बल्कि मस्जिद तशरीफ ले गए तीन चार बार यों ही किया तीसरी या चौथी बार हजरत आयशा रजि0 ने कहा अल्लाह ने दिया यानि हजरत उसमान रजि0 ने आकर दिया और उनहोने रोकर कहा घर से मंगवा लिया करों, ये सुनकर आप सल्ल0 ने फरमाया ! आयशा अगर जूते का तस्मा भी टूटे तो अल्लाह से मांगों, अल्लाह हमारे रब हैं इसकी हकीकत यह है कि नमाज के जरिये मसले हल कराओ वर्ना जुबान पर रहेगा कि अल्लाह रब है लेकिन जब नमाज पर मेहनत करके रोटी, औलाद, मकान, सेहत, इज्जत, और अम्न के मसाइल हल कराये जाएं तब यकीन बनेगा कि अल्लाह हमारे रब हैं। शख्सी मसलों का हल शख्सी नमाज से होगा और मुल्क के मसले मुल्की नमाज से हल होगें, इंफिरादी, शहरी और देहाती मसलों को नमाज पर मेहनत करके अल्लाह से हल कराओं यह रब होने की मेहनत है।

आप सल्ल0 ने सहाबा को इसी मेहनत पर डाला था तब किसरा व कैसर अमरीका व रूस की तरह थे दोनो मुल्कों के खजाने अल्लाह ने सहाबा के कदमों पर डाले और देहाती लोग गवर्नर बने, यह सब कुछ नमाज से हुआं। हजरत उमर रजि0 के जमाने में फुतुहात हुई फिर बाद में बड़ा भारी जबरदस्त कहत पड़ा चारों तरफ से लोग मदीना आए, हजरत उमर रजि0 ने इंतिजाम शुरू किया और दुआ की कि ये लोग मरने न पाएं भारी इंतिजाम था। हजरत अम्र बिन आस रजि0 को मिस्र में खत लिखा कि जल्दी से गल्ला भेजो, जवाब दिया कि खाने पीने का सामान लाद कर ऊंटो का इतना बड़ा काफिला भेजूंगा जिसका पहला ऊंट मदीना में और आखिरी मिस्र में होगा चुनांचे गल्ला आया, उस वक्त चालीस पचास हजार आदमी तो हजरत उमर रजि0 के दस्तरख्वान पर रोजाना खाना खाते थे, देहात में अगर एक घर भी होता तो खाना वहां भी भेजा जाता, बहुत लम्बा चौड़ा इन्तिजाम किया मगर कहत बढ़ रहा था, उसी जमाने में एक साहब ने एक बकरी जिब्ह की तो उसमें सिवाए हडडी और खून और के कुछ न निकला, इसके बाद आदमी की चीख निकली और कहा या मुहम्मदाह (हाय मुहम्मद सल्ल0) आंखो में से आंसू निकल पड़े, पड़ कर सो गए। ख्वाब में हुजूर सल्ल0 की जियारत हुई फरमाया कि उमर को मेरा सलाम कहकर कहो तू तो अक्लमंद था क्या हुआ ? आंख खुली तो तो हजरत उमर रजि0 के दरवाजे पर जाकर कहा कि या अमीरूल मोमिनीन ! अजिब रसूलुल्लाह सल्ल0 यानि हुजूर सल्ल0 के पैगाम लाने वाले को जवाब दो।

हजरत उमर रजि0 भूल में आपका जमाना जान कर दौड़े, दरवाजे पर याद आया कि यह हुजूर सल्ल0 का जमाना नही है। यह सुनकर हजरत उमर रजि0 कांप उठे और कहा कि मेरी जिंदगी में फर्क आ गया, सारे मदीना के लोगों को जमा करके पूछा मै आप सल्ल0 की जिंदगी से बदला तो नही ? लोगों ने कहा नही। फरमाया कि फिर यह आदमी क्या कहता है ? लोगों ने ख्वाब सुना तो सबने जाना सिर्फ हजरत उमर रजि0 ने न समझा मतलब यह है कि जब तुम्हारी नमाज और दुआ कुबूल है तो इन्तेजाम के चक्कर में क्यों फंसे ? अम्र बिन आस रजि0 को मदद के लिये खत क्यों लिखा अल्लाह से क्यों नही मांगा ? इस पर हजरत उमर रजि0 ने वही बारिश की दुआ मागी और कहत दूर होने की दुआ मांगी मुख्तसर सी दुआ “अल्लाहुम्मा इनना नस्तग्फिरूक व नस्तस्की” कह कर मुंह पर हाथ फेरने से पहले बारिश शुरू हो गई जानवरो में जान

पड़नी शुरू हुई, देहातियों ने कहा कि चारों तरफ से बादलों से यह आवाज आ रही है अताकल गौस अबा हफस ऐ उमर रजि0 तूने बारिश मांगी आ गई ।

अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर नमाज का कियाम था

हजरत उमर रजि0 ने ऐसी नमाज अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर पढ़ी थी कि अल्लाह पालने वाले हैं तो नमाज पर मेहनत करके हुजूर सल्ल0 वाली नमाज बनानी पड़ेगी, फजाइल और मसाइल पर भी मेहनत करनी पड़ेगी, वुजु इमामत इक्तिदार के मसाइल पर भी मेहनत करनी पड़ेगी, जो न आएं उनके लाने के लिए भी मेहनत करनी पड़ेगी। सूरत बनाकर सीरत बनाओ न आने वालों को मस्जिद में लाओं और सिखाओ, अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर नमाज का कियाम था, सहाबा किराम के जमाने में जबरदस्त मेहनत करके मैदान कायम किए गए थे, शरीफ इंसानों का ऊपर आना और इंसानों की जिंदगी का बनाना यह सब जब होगा कि आपके तरीके की नमाज को दुनिया में कायम करने की मेहनत करो, तुम खुद न करोगे बल्कि खुदा करेगा दुकान खेत से पलने के मंसूबे के बजाए अल्लाह से पलने के लिए नमाज पर मेहनत करनी होगी यह जबरदस्त मेहनत है।

पहले तो "ला रब-ब इल्लल्लाह" मेहनत का मैदान है फिर ऐसी नमाज कर लो कि 'अल्लाह रब्बुना' की तर्तीब कायम हो, ऐसी नमाज बनाओ कि ईमान पर खात्मा हो और कब्र के अजाब से हिफाजत हो और कियामत में रोशनी मिले। नमाज को तर्बियत के लिए चालु करो, अपनी कमाई मे से वक्त निकालो और खेती से पलने के यकीन को खत्म करो, अल्लाह से पलने का यकीन पैदा करो इसी की दावत दो। जाते इलाही के खजानों की अज्मत और बड़ाई को सुनो और इतना सुनो कि वह जात तुम्हारी आखों के सामने आ जाए 'इन ताबुदुल्ला-ह क-अन्न-क तराहु' यानि अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि गोया खुदा को देख रहे हो इसके लिये कलिमा नमाज के फायदों का इल्म जिक्र व इख्लास के साथ लेना होगा। इसको अपने अन्दर पैदा करना और दूसरों के अन्दर पैदा कराने की मेहनत करना यह मस्जिद का काम है, इस मेहनत के जरिये दुकान और खेत से पलने का यकीन हटाना है और मस्जिद वाले आमाल से पलने का यकीन लाना है।

अदावत, चोरी, डकैती सब रूकेगे अगर आप सल्ल0 वाली ये सारी चीजे मेहनत करके मस्जिद में चला दी जाएं, अल्लाह को अल्लाह और रब कहने की बुनियाद पर यह मेहनत होगी इसके लिए मस्जिद की चीजें चलाओ, आप सल्ल0 ने मस्जिद की चीजें भूखे और प्यासे रहकर चलाई थी सर्दी से बदन कपकपा रहे हैं और मस्जिद में तालीम चल रही है। हजरत अबु सईद खुदरी रजि0 कहते हैं कि सहाबा किराम रजि0 का मज्मा था आप आकर खड़े हुए उनमें से मुझे पहचाना और आप बैठ गए और फरमाया कि ऐ फकीरों और मुहाजिरों के गिरोह ! मलदारों से पांच सौ साल पहले जन्नत में जाओगे इसके लिए इमामत, इक्तिदा, खुशअ-खुजुअ सफ सीधी करना, इन सब बातों पर मेहनत है। वह नमाज बने जिस नमाज से खुदा दुनिया की तर्तीब बदले, जालिमों को जिना करते हुए सजा दे, उसके लिए नमाज का माहौल बने फिर ताकत का मुजाहरा होगा।

पालने वाला इबादत पर पालेगा

अगर अल्लाह को रब मानते हो तो यह मेहनत करो कि अल्लाह रब हैं वह नमाज पर और नमाज की तालीम पर पालेंगे, सेहत देगें, कर्ज दूर करेगें इसको बैठकर सुनो। फजाईल की तालीम होगी तो मालूम होगा कि बाहर वालों का बचाव मस्जिद के अन्दर की आबादी से है वरना बेड़ा गर्क होगा यह हदीस है। ये बातें मुख्बिरे सदिक सल्ल0 की बातें मालूम होगी कि तुम इज्जत, हिफाजत और गिना कहां ढूंढ रहे है ? और यह इज्जत हिफाजत और गिना है कहा ? तुम्हें सब चीजें नमाज में मिलेगी। दावत, तिलावत, कुरआन वगैरह पर यकीन हो नमाज के बाहर और अन्दर भी यकीन भरा हो। अल्लाह अक्बर कहकर, सुब्हाकाअल्लाहुम्मा फिर अल्हमदुलिल्लाह रब्बिल आलमीन कहे यानि तर्बियत करने वाले अल्लाह हैं सारे आलम की तर्बियत करने वाले 'इयया-क नअबुदु' यानि हम इबादत पर तर्बियत करेगें और कियाम व रूकुअ इबादत है इस पर खुदा पालेगें अगर मेरा रूकुअ और कुरआन पढ़ना और इस्तिकाले किबला आप सल्ल0 के तरीके पर आ गया तो अल्लाह मुझे पालेगा, पालने वाला इबादत पर पालेगा कियाम आपके वाले तरीके पर होगा तो पालेगा।

'सुबहा-न रब्बियल अजीम' में भी यही बात है कि तर्बियत करने वाले अल्लाह है,इबादत पर तर्बियत करेगें, रूकुअ इबादत है सर, कमर कूल्हे आपके तरीके पर होगें तो अल्लाह पालेगें, हर हिस्से पर खुदा से परवरिश का यकीन जमाओ जलसे में 'रब्बिगफिरली कहा यानि अल्लाह पालने वाले है।

आपने इंसानों से लेने का कोई रास्ता अख्तियार नही फरमाया

नमाज किस बात से ठीक होगी ? नमाज ईमान और अल्लाह के ध्यान से ठीक होगी इसके लिये अपने अन्दर यकीन, नीयत, शक्ल, शौक और ध्यान बनाने के लिये दूसरों में मेहनत करो, अपने मुहल्ले में बनाओ दूसरे मुहल्ले में मेहनत करो, अपने मुहल्ले में और दूसरे मुहल्ले में गश्त करो, सारी दुनिया में कोशिश करो, नुबूवत मिलने के बाद आप ाल्ल0 ने इंसानों से लेने का कोई रास्ता अख्तियार नही फरमाया आपने तायफ, तबूक, यमन हजरमौत और नज्द वालों को नमाज बताई कि जो कलिमा पढ़े नमाज बनाने की मेहनत करे, जब ये यकीन बने कि अल्लाह रब है ओर रास्ता नमाज है, यह चीज जब दुनियॉ में चले तो दुनियॉ की तर्तीब बदलेगी। नमाज को अन्दर से बनाओ इसलिये कि मसले का अन्दर से ताल्लुक है, जब यह बना लो तो नमाज की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो घर, कारोबार और मुआशरत। हुजूरे अक्दस सल्ल0 के वो तरीका ए अमल अपनी जिन्दगी मे लाओ जो अमल अल्लाह की जात से पलने के लिए है। आप सल्ल के रास्ते में भी कमाई और घर है और इंसानों के रास्ते मे भी कमाई और घर के नक्शे है, रब की बुनियाद पर नमाज और नमाज की बुनियाद पर कमाई यानि जब कमाई से परवरिश नही बल्कि अल्लाह से परवरिश है तो अल्लाह का हुक्म मान कर लेगें, जब यह बात है तो फिर क्यों कमा रहा है ?

कमाना और न कमानां

कि पहले नमाज से परवरिश ली लेकिन नमाज के बाद दो रास्ते हैं कमाना और न कमाना अगर न कमाया और सिर्फ नमाज पढ़कर अल्लाह से ले तो भी ठीक है बस इसमें सिर्फ यह शर्त है कि अगर न कमाओ तो किसी मख्लूक का माल न दबाना और हाल का इज्हार न करना, सवाल न करना, इसराफ न करना, तकलीफ पहुंचे तो जजा फजा न करना, अल्लाह से राजी रहना अगर इतनी बात आ जाए तो कमाई की जरूरत नही है, इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं और हुजूर सल्ल0 हैं, हजरत ईसा अलै0 है, और अस्हाबे सुफफा हैं और लाखों मिसालें हैं कि जिन्होने सिर्फ नमाज से अपना काम चलाया है।

अगर कमाना है तो उस पर भी पाबन्दी है अगर कमाते हो तो कमाई की बुनियाद यह है कि कमाई से न मिलेगा बल्कि नमाज पर अल्लाह से मिलेगा और आपके तरीका ए अमल से कमाई पर मिलेगा कि मै पैसे के लिए नहीं कमाऊंगा बल्कि आपके तरीका ए अमल कमाई में हमे चलाने हैं, कमाना अमल करने के वास्ते है, हम यकीन पैदा कर रहे हों कि हमे सिर्फ अल्लाह पालेगा। सुअर, कुत्ता, बिल्ली इनका खाना हराम है और बकरी, गाय, मुर्गी, हिरन हलाल है पर इनमें भी हराम व हलाल बनेगा अगर बिस्मिल्लाह अल्लाह अकबर कहकर जिब्ह किया तो हलाल वरना हराम होगा, बकरी को बीच से मार कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहा तो भी हराम बनेगा क्योकि तरीका गलत था। पहले तो कमाई की किस्म हलाल पर है या हराम पर है फिर हलाल में भी तरीका हलाल है या हराम है ? अगर अल्लाह के रब होने का यकीन है तो आपका तरीका चालु करने पर आवें खुदा की रिजा के लिए कमाइए, फजाइल के शौक और मसाइल की पाबन्दी के साथ कमाइए। जो बात नमाज में कही वही कमाई में कही, जब कमाई, तिजारत, जराअत में राब्ता खुदा की जात में हो तो दुनिया में चमकना और फलना-फूलना होगा जलजला, सैलाब , बमबारी में दुकान और घर का बाल बांका न होगा क्योकि महबूब का तरीका है, चाहे दुकान मिटटी की है, आप सल्ल0 का तरीका है तो एटम से ज्यादा ताकतवर है, फिर कमाई की बुनियाद पर घर चलावेंगे कि कुछ लिबास हराम और कुछ हलाल हैं, खाना और उसका तर्ज कुछ हराम, कुछ हलाल हैं। इस यकीन को लो कि अल्लाह रब हैं अगर आप सल्ल0 के तरीके पर पैसे खर्च करेंगे, लिबास और गिजा की तर्तीब आपके तरीके पर होगी तो अल्लाह पालेगा। आपके तरीके का झोंपड़ा किसरा के किले से बेहतर है, मुश्रिकीन, मुलाहिदीन, फुस्साक व फुज्जार की ढ़ाई लाख की कोठी से बेहतर है, पांच रूपए की झोपड़ी में वह खैर है जो पचास लाख की कोठी में नही है, इसका नाम ईमान है।

आपके तरीके का सवा रूपए का कुरता मजेदार होगा, यहुद व नसारा के तर्तीब वाले पचास लाख के कपड़े से उसमें वह मजा नही है। आप सल्ल0 के तरीके पर अल्लाह पालेगें और यहूद व नसारा के तरीके पर घर का नक्शा आया तो फिर खुदा बिगाड़ेगा। शादी के तरीके, वलादत व मौत के तरीके में भी अपने तरीके बदल कर आप सल्ल0 के तरीके लो अगर तुमने इन घरों को यहूद व नसारा के तरीके पर रखा तो पानी की बौछार और जमीन का झटका उसे तोड़ देगा अगर आपका तरीका है ता एटम बम भी नही तोड़ सकेगा।

कमाई की हवस

लोहा, पत्थर मस्जिद में लगाया ये सब बेकीमत है, कीमती तो आप सल्ल0 के तरीका ए अमल हैं, आपके बदन से जो तरीका ए अमल चले वे कीमती है। हुक्म खुदा का हो और तरीका ए अमल आपके हों अगर सारी दुनिया की कोठी हीरे जवाहारात हों तो आपके पाखाना फिरने का अमल उससे कीमती है आगे मुआशरत है। जब कमाई और खर्च आप सल्ल0 के तरीके पर लाओगे तो गनी बनोगें, अमरीका और रूस और सारी दुनियॉ फज्र की दो रकअत अमल के बराबर भी नही एक आदमी पांच हजार रूप्या लेकर अफ्रीका गया, वहां बहुत नमाजी बने, इंग्लिस्तान और फ्रांस में मस्जिदें बनी इसलिए माल यहां खर्च करो जिंदगी सादा बनाओ तो कमाई की हवस न रहेगी। कमाई की हवस हुजूर सल्ल0, हजरत अबुबक्र व उमर रजि0 के नक्शे पर आने के लिए नही हैं बल्कि कारून फिरऔन, शददाद और शराबियों और जानिओं के तरीके पर आने के लिए है, पैसा और वक्त खूब बचेगा जब आपकी तर्बियत के तरीकों पर आओगे। अमीर व गरीब को जोड़ा तो सारी दुनिया की इंसानियत पर भारी एहसान होगा, खुदा खुद बदला देगा, एक-एक नमाज पर सातों जमीन व आसमान से बड़ी जन्नत मिलेगी फिर मुआशरत ह दुनिया में इंसाफ चलाना है, हम लाखों की बिल्डिंग में रहे और लोगों को झोपड़ा भी न मिले यह जुल्म है इंसाफ नही है।

ये यहूद व नसारा दूसरों का खून पीते हैं उनकी नकल उतारने मे मजा आता है और जिस जाते गिरामी सल्ल0 ने फाके बरदाश्त किए और अपना खून बहाया, उनके तरीके पसन्द नही आते आपके खून के कई कतरे बहे, एक वक्त का फाका और खून का कतरा सारी दुनिया से अफजल है। उश्शाक माल देते थे और आप उम्मत की जरूरत पर माल लगा कर फाका करते थे । हजरत फातिमा रजि0 अन्हा बीमार थीं, हजरत अली रजि0 ने अबु जहल की बेटी से निकाह करने का इरादा किया आपने मिंबर पर खड़े होकर फरमाया कि मैं हलाल को हराम नही कहता लेकिन इस निकाह से फातिमा को तकलीफ होगी और उसकी तकलीफ से मुझे तकलीफ होगी, इतनी महबूब बेटी की शादी में पचीस रूपए भी न लगाए हजरत फातिमा रजि0 खुद चक्की पीसती थी, हजरत अली रजि0 मजदूरी करते हैं, मश्क ढोते है छः बच्चे परवरिश पाते है। हुजूर सल्ल0 के पास गुलाम बांदी आए तो हजरत अली रजि0 ने हजरत फातिमा रजि0 को भेजा कि गुलाम बांदी मांगो काम मे हाथ बटाएंगे हजरत अली रजि0 ने हाथ और कोख दिखाई और हजरत फातिमा रजि0 ने भी हाथ कोख दिखाए और गुलाम और बांदी मांगे। आपको गुस्सा आया फरमाया तुम्हे तो बांदी और गुलाम दूं और मेरी उम्मत भूखी रहे, आपने अपने को और अपनों को कुर्बान करके उम्मत बनाई है तुम अपने ऐंश को कुर्बान करके उम्मत को बचाओ। कौम वतन कबील के बनके न चलो, अल्लाह के बनकर चलो परदेसियों और मकामियों का मसला हो तो उसे जुल्म का नारा न बनाओ, सिंधी और पठान कहा तो यह जुल्म का नारा है। जब आदमी जुल्म करे जाहिलियत और असबियत पर मदद करे तो नमाज और रोजा मुंह पर फेंक कर मार दिया जाता है। यहां तक कि मुस्लिम और गैर मुस्लिम मसला भी नही है। मुस्लिम ने हिन्दू को मारा और मुस्लिम की मदद की तो तुम जालिम बने, हर मसले में वाकिया की तहकीक करो। सिंधी ने पंजाबी को पीटा, पंजाबी ने पठान का माल दबाया अब कहो कि जुल्म और इंसाफ का मसला है, मुसलमान से इसाफ दिलाना है, इंसाफ वाले सरों पर आते है और जुल्म वाले पैरों पर गिरते है। इंसाफ पर खुदा ऊपर लाएगा कौमियत, उबूवत, नुबूवत की बुनियाद पर मदद होगी कौन मज्लूक है और कौन जालिम है ? यह देखा जाएगा।

इन तीनों लाइनों में अल्लाह को रब मानकर आपके तरीके पर आओ तो राकेट और एटम बम से खुदा महफूज करेगा। आप सल्ल0 के तरीक पर करेगा आपके तरीके टूटने पर न मानने वालों को पैरां पर डालता है और मानने वालां को सरों पर लाता है। पहले इबादत को ताकतवर बनाओ फिर तीनों लाइनो को अल्लाह के रब होने पर और आप सल्ल0 के तरीके पर उठाओ तो खुदा मदद करेगा इसलिए आपने कमाई और घर की तर्तीब बनाई इस पर आना आसान होगा अल्लाह आसान करेगा।

यूरोप वाले खून लेने वाले हैं और आप सल्ल0 अपना खून देने वाले हैं तो अब बताओ कि हाल के मुश्रिक, मुल्हिद और यहूद नसारा ने जो खून किया है उसे देखोगें तो आपका तरीका महबूब बनेगा, जब अल्लाह के रब होने का यकीन हो इसीलिए आपने वक्तों की तर्तीब कायम की साल भर में चार महीने मदनी सहाबा रजि0 अपना माल लेकर खुदा के रास्ते में निकले ताकि इबादत का माहौल दुनिया में कायम हो और आठ माह अपने मकाम पर रहते हुए आधा दिन मस्जिद में और आधा दिन कारोबार में आधी रात मस्जिद में और आधी रात घर में। इसके एतबार से चार महीने मकामी इबादत का माहौल

बनाने के लिए दो महीने कारोबार और दो महीने घर के लिए और चार महीने बाहरी नक्ल व हरकत करते हुए इबादत का माहौल बनाने के लिए।

जब एक तबका मदनी सहाबा रजि0 की तर्तीब पर पड़ जाए तो दुनिया मे दीन फैले।

रब्बियल्लाहु-रब्बियल्ल्लाहु

इस बयान के बाद लोगों से चिल्ला तीन चिल्ले के औकात की तश्कील की गई, इसके बाद एक साहब का निकाह पढ़ाने की दरख्वास्त की गई हजरत जी रह0 ने निकाह पढ़ाया तबियत चूंकि पहले से मुजमहिल चल रही थी इसलिए कि मश्रिकी और मग्रिबी पाकिस्तान का लगभग डेढ़ माह से ज्यादा का सफर रहा जिसमें शब व रोज इंतिहाई मेहनत व जांफशानी की वजह से राहत व आराम का मौका नही मिला था। इसलिए अपनी हमेशा की आदत के खिलाफ सिर्फ एक मिनट की दुआ फरमा कर करीब की कियामगाह की तरफ तशरीफ ले जा ही रहे थे कि साद बिन हाफिज मुहम्मद सिददीक नूही को बुलाकर फरमाया कि मुझे चक्कर आ रहे हैं और उसका हाथ पकड़ कर चलते रहे यहां तक कि अचानक वे जमीन पर बैठते चले गए। गिरते ही पसीनों म तरबतर हो गए मुश्किल से चारपाई पर लाद कर लिटाया गया बेहोशी तारी हो गई। हकीम साहब ने दवा खिलाई कुछ मिनटों के बाद होश आया इशा की नमाज दो आदमियों के साथ मिलकर रात को साढ़े तीन बजे अदा की फिर सुबह के वक्त सुबह की नमाज अदा फरमाई। मौलाना इनामल हसन साहब को अपनी किताबों की जकात निकाल देने की वसीयत की। डाक्टर साहब ने मुआयना करके कहा कि अब खतरे से बाहर है। मगर शदीद एहतियात की जाए। जब सब लोग जुमा की नमाज के लिए मस्जिद चले गए तो फिर हालत मुतगययर हो गई दो आदमियों के साथ मिलकर नमाज इशारे से अदा फरमाई, लेकिन सांस उखड़ चुकी थी बार बार रब्बियल्लाहु-रब्बियल्ल्लाहु पढ़ रहे थे अहबाब जुमा के फर्ज अदा करे आए आपने फरमाया, शायद आखिरी वक्त है। सब लोग कुरआन पढ़े और जिक्र करे और खुद हिज्बुल आजम की दुआएं पढ़ने मे मशगूल हो गए, खास तौर से वह दुआ जो हुजूरे अकरम सल्ल0 मक्का की फत्ह के वक्त पढ़ रहे थे यानि-

ला इला-ह.......और आखिर तक पढ़ते हुए शहादत की उंगली आसमान की तरफ बार-बार उठाते थे।

इतने में डाक्टर आ गए और अस्पताल ले जाने का मश्विरा दिया, हजरत जी ने अस्पताल की बात सुनी तो फरमाया वहां औरते होगी, मै न जाऊंगा। डाक्टर और बाअसर हजरात ने अर्ज किया कि हजरत ! एक औरत भी पास न आएगी, फरमाया फिर कोई मुजायका नही आखिर एक बड़ी कार में लिटाया गया, फरमाया कि मेरे साथ कौन चल रहा है? मौलाना इनामुल हसन साहब और हाफिल मुहम्मद सिददीक साहब वगैरह ने कहा कि हम सब साथ है। आपने फरमाया मेरे साथ कोई नही चल रहा है बस अल्लाह साथ है।

रास्ते भर ''ला इलाहा इल्लल्लाह का विर्द जुबान पर जारी रहा एक बार मालूम फरमाया कि अब अस्पताल कितनी दूर है कहा गया कि बस पहुंच रहे है। अब ला इलाहा इल्लल्लाहु की आवाज जरा धीमी पड़ चुकी थी फिर होठ कलिमा तैयिबा की तकरार से हिलते रहे यहां तक कि अस्पताल के दरवाजे ही पर रहमते हक ने उस बेचैन रूह को बढ़कर अपनी गोद में ले लिया और सालों के थके मुसाफिरों ने रफीक आला के पास जाकर आराम पा लिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन